॥ श्रीहरिः ॥

2183

उपनयन-संस्कार-पद्धति

[वेदारम्भ एवं समावर्तनसंस्कार-पद्धतिसहित]

गीताप्रेस गोरखपुर
GITA PRESS, GORAKHPUR [SINCE 1923]

गीताप्रेस, गोरखपुर
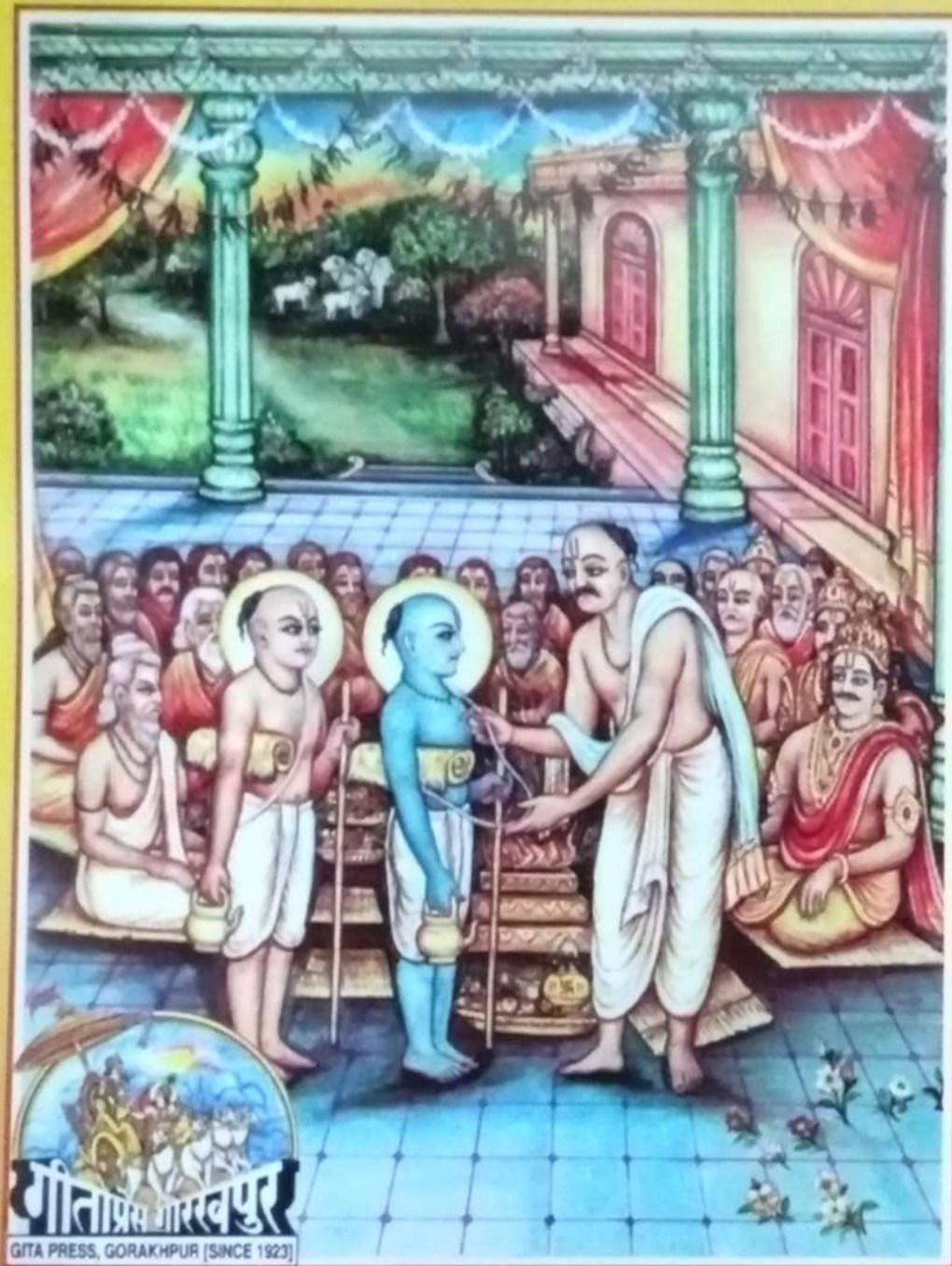
सम्पादकीय निवेदन

भारतीय सनातन संस्कृतिमें संस्कारोंको सम्पन्न करने तथा उनकी विधियोंके अनुपालनकी विशेष महिमा है। संस्कार शब्दका सामान्य अर्थ है—विमलीकरण अथवा विशुद्धीकरण। जिस प्रकार किसी मलिन वस्तुको धो-पोंछकर शुद्ध-पवित्र बना लिया जाता है अथवा जैसे सुवर्णको आगमें तपाकर उसके मलोंको दूर किया जाता है, वैसे ही संस्कारोंके द्वारा जीवके जन्म-जन्मान्तरोंसे सम्बन्धित मलरूप कर्म-संस्कारोंका भी दूरीकरण किया जाता है। किसी दर्पणपर पड़ी हुई धूल आदि सामान्य मलको वस्त्र आदिसे पोंछना, हटाना या स्वच्छ करना मलापनयन अथवा दोषापनयन कहलाता है, फिर किसी रंग या तेजोमय पदार्थद्वारा उस दर्पणको विशेष चमत्कृत या प्रकाशमय बनाना गुणाधान या अतिशयाधान कहलाता है। इस प्रकार संस्कारमें मुख्यतः दो प्रकारकी क्रियाएँ होती हैं—एक है दोषापनयन और दूसरा है गुणाधान। संस्कार, संस्कृति और धर्मद्वारा मानवमें मानवता आती है, संस्कारोंसे मलिन अन्तःकरण विशुद्ध हो जाता है, यही कारण है कि सनातन धर्ममें गर्भमें आनेसे लेकर मृत्युपर्यन्त संस्कार किये जाते हैं। संस्कारोंसे शारीरिक एवं मानसिक शुद्धि एवं निर्मलता तथा शास्त्रीय कर्मोंको करनेकी योग्यता प्राप्त होती है। इन संस्कारोंका प्रभाव विशेष रूपसे अन्तःकरणपर पड़ता है।

शास्त्रोंमें सोलह से लेकर अड़तालीसतक संस्कार बताये गये हैं, उनमें सोलह संस्कारोंकी विशेष प्रतिष्ठा है। व्याससमृतिमें इन सोलह संस्कारोंका इस प्रकार परिगणन किया गया है—

(१) गर्भाधान, (२) पुंसवन, (३) सीमन्तोन्नयन, (४) जातकर्म, (५) नामकरण, (६) निष्क्रमण, (७) अन्नप्राशन, (८) वपनक्रिया (चूडाकरण), (९) कर्णवेध, (१०) उपनयन (व्रतादेश), (११) वेदारम्भ, (१२) केशान्त, (१३) समावर्तन, (१४) विवाह, (१५) विवाहाग्निपरिग्रह तथा (१६) त्रेताग्निसंग्रह।* कुछ आचार्योंके मतमें अन्त्येष्टिकर्मको सोलहवें संस्कारके रूपमें परिगणित किया गया है। इस संस्कारकी पूर्ण विधि गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित संस्कारप्रकाशमें देखनी चाहिये।

षोडश संस्कारोंमें भी उपनयन-संस्कारका विशेष महत्त्व है। उपनयनके बिना बालक किसी भी श्रौत-स्मार्त कर्मका अधिकारी नहीं होता। यह योग्यता उपनयन-संस्कारके अनन्तर यज्ञोपवीत धारण करनेपर ही प्राप्त होती है। उपनयनके बिना देवकर्म और पितृकर्म नहीं किये जा सकते। इस संस्कारसे ही द्विजत्व प्राप्त होता है।

तैत्तिरीय संहिताने बताया है कि मनुष्य तीन ऋणोंको लेकर जन्म लेता है (१) ऋषि-ऋण, (२) देव-ऋण और (३) पितृ-ऋण। इन तीनों ऋणोंसे मुक्ति बिना यज्ञोपवीत-संस्कार हुए सम्पन्न नहीं होती। यदि यज्ञोपवीत-संस्कार न हो तो इन तीनों कर्मोंको करनेका उसका अधिकार नहीं रहता। अतः यज्ञोपवीत-संस्कारका बहुत महत्त्व है। इसे व्रतबन्ध, मौंजीबन्धन तथा व्रतादेश भी कहते हैं। सनातन संस्कृतिकी यह मान्यता है कि एक बार माताके गर्भसे जन्म

---

* इन संस्कारोंका परिचय, उनकी महत्ता, उनकी प्रयोग-विधि तथा उनसे सम्बद्ध ज्ञातव्य बातोंका विस्तारसे प्रतिपादन गीताप्रेससे प्रकाशित **संस्कारप्रकाश** नामक ग्रन्थमें किया गया है, जिज्ञासुजनोंको उसका अवलोकन करना चाहिये।

होता है और दूसरा जन्म होता है उपनयनसंस्कारसे। इसी आधारपर जिसके वैदिक संस्कार हुए हों, वह द्विज अर्थात् दो बार जन्म लेनेवाला कहा जाता है।

आचार्य पारस्करने ब्राह्मण, क्षत्रिय तथा वैश्य बालकके लिये क्रमसे जन्मसे अथवा गर्भसे आठ, ग्यारह और बारह वर्ष उपनयनका मुख्यकाल बताया है। किसी कारणवश मुख्यकालमें यज्ञोपवीत-संस्कार न हो सका हो तो ब्राह्मण बालकका सोलह, क्षत्रिय बालकका बाईस तथा वैश्य बालकका चौबीस वर्षतक उपनयन-संस्कार हो जाना चाहिये। मुख्यकाल तथा गौणकालका भी अतिक्रमण होनेपर शास्त्रने यह व्यवस्था दी है कि अनादिष्टप्रायश्चित्त करके वह पुनः संस्कारकी योग्यता प्राप्त कर लेता है। यह क्रिया व्रात्यस्तोम-हवन कहलाती है। अज्ञानतावश यदि यज्ञोपवीत नहीं किया गया हो तो अधिक उम्र होनेपर भी प्रायश्चित्तका संकल्पकर यज्ञोपवीत धारण करना चाहिये। आचार्य पारस्करने कुलपरम्पराका समादर करते हुए बताया है कि अपने कुलाचारानुकूल उपनयन-संस्कार करना चाहिये।

यज्ञोपवीत-संस्कारमें मुख्य रूपसे यज्ञोपवीत (जनेऊ)-धारण तथा गायत्री (सावित्री) मन्त्रका उपदेश—ये दो मुख्य क्रियाएँ हैं। यज्ञोपवीत (जनेऊ)-को ब्रह्मसूत्र, सवितासूत्र तथा यज्ञसूत्र भी कहते हैं। यज्ञोपवीत-निर्माणकी शास्त्रीय विधि है, यह माला-जैसा दिखनेवाला सूत नहीं है, अपितु ब्रह्मतेजको धारण करनेवाला तथा समस्त देव एवं पितृकर्मोंको सम्पादित कर सकनेकी योग्यता प्रदान करनेवाला देवसूत्र है। इसको बनानेकी विधि कात्यायन परिशिष्टमें बतायी गयी है। यज्ञोपवीतके नौ तन्तुओंमें नौ देवताओंका वास है और ब्रह्मग्रन्थिमें तीनों वर्णों, तीनों गुणों

तथा तीनों देवताओंका वास है, इस प्रकारसे संस्कारित तथा प्रतिष्ठित यज्ञोपवीतको इस संस्कारमें धारण कराया जाता है। यज्ञोपवीतके अपवित्र तथा जीर्ण हो जानेपर प्रतिष्ठित नया यज्ञोपवीत विधिपूर्वक धारण करना चाहिये।

यज्ञोपवीत जब बायें कन्धेसे दाहिने हाथके नीचे दाहिनी तरफ होता है तो इसे उपवीती या सव्य कहते हैं। सभी मांगलिक और देवकार्य इस अवस्थामें ही होते हैं। जनेऊको कण्ठमें मालाकी भाँति धारण करनेको निवीती-अवस्था कहते हैं। तर्पणमें सनकादि ऋषियोंको इसी अवस्थामें जलांजलि दी जाती है। यज्ञोपवीत जब दाहिने कन्धेसे बायें हाथके नीचे बायीं ओर किया जाता है तो इस स्थितिको प्राचीनावीती या अपसव्य कहते हैं। सम्पूर्ण पितृकर्म—श्राद्ध-तर्पण आदि अपसव्य होकर ही करनेकी विधि है।

स्त्रियोंको विवाहसंस्कारसे ही द्विजत्वकी प्राप्ति हो जाती है तथा यज्ञोपवीत (जनेऊ)-धारण किये हुए व्यक्तिसे विवाह होनेपर पत्नी भी उपनीत हो जाती है, उनके लिये अलगसे उपनयनका विधान नहीं है। स्त्रियोंका विवाह-संस्कार ही यज्ञोपवीत-संस्कार है—'वैवाहिको विधिः स्त्रीणां संस्कारो वैदिकः स्मृतः।' (मनुस्मृति २। ६७) इस प्रकार उपनयन-संस्कार जीवनके लिये आवश्यक एवं उपयोगी संस्कार है। इस पुस्तकमें उपनयनकी शास्त्रीय विधि दी गयी है।

उपनयन-संस्कारके अनन्तर उसी दिन वेदारम्भ-संस्कार कर लेते हैं, जैसा कि इस संस्कारके नामसे ही स्पष्ट है कि इस संस्कारमें आचार्यके द्वारा ब्रह्मचारीको अपनी वेदशाखाका ज्ञान और मन्त्रोपदेश कराया जाता है। योगियाज्ञवल्क्यने बताया है कि आचार्य उपनयन करके बालकको महाव्याहृतियोंके साथ वेदका अध्ययन कराये और उसे शौचाचारकी शिक्षा प्रदान करे—

उपनीय गुरुः शिष्यं महाव्याहृतिपूर्वकम्। वेदमध्यापयेदेनं शौचाचारांश्च शिक्षयेत्॥

यहाँ इस पुस्तकमें उपनयनके अनन्तर वेदाध्ययनकी विधि दी गयी है। तदनन्तर समावर्तन-संस्कारकी प्रक्रिया भी दी गयी है। समावर्तनका अर्थ है गुरुकुलसे शिक्षा ग्रहणकर गुरुकी आज्ञासे अपने घर वापस आना। यह शिक्षा-प्राप्तिका दीक्षान्त-संस्कार है। इस संस्कारमें ब्रह्मचर्याश्रम—विद्याध्ययनकी पूर्णता होती है और फिर विवाहके अनन्तर गृहस्थाश्रममें प्रवेशकी अधिकार-सिद्धि होती है, अब वह ब्रह्मचारी नहीं, अपितु स्नातक कहलाता है। ब्रह्मचर्यके चिह्न मेखला आदिका त्याग करके जटा-लोम आदिका छेदन करके गार्हस्थ्यके उपयुक्त चन्दन, पुष्पमाला, पगड़ी, वस्त्राभूषण तथा अलंकार आदिका धारण करता है। गुरुद्वारा उसे दीक्षान्त उपदेश—'सत्यं वद, धर्मं चर, मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्यदेवो भव' आदिका उपदेश प्राप्त होता है। इस प्रकार समावर्तन-संस्कारकी पूर्णता होती है और गृहस्थाश्रमकी योग्यता-प्राप्ति होती है।

कुछ दिनों पूर्व गीताप्रेससे 'संस्कारप्रकाश' नामक एक ग्रन्थ प्रकाशित हुआ है, जिसकी विद्वानोंने प्रचुर सराहना की है। अध्येता महानुभावोंका एवं संस्कारोंको सम्पन्न करानेवाले आचार्यगणोंका यह सुझाव भी प्राप्त हुआ कि उपनयन-पद्धतिको अलगसे भी प्रकाशित किया जाय, ताकि लघु आकार होनेसे सौविध्य प्राप्त हो सके। तदनुसार यह उपनयन-पद्धति प्रकाशित की गयी है। सुविधाकी दृष्टिसे उपनयन-संस्कारके दिन ही प्रायः वेदारम्भ तथा समावर्तन-संस्कार भी कर लेनेकी परम्परा है। इसीको ध्यानमें रखते हुए तीनों संस्कारोंको सम्पन्न करनेकी शास्त्रीय विधि इस पुस्तकमें दी गयी है, मन्त्रभाग संस्कृतमें है तथा उसके साथमें हिन्दीमें निर्देश भी दे दिये गये हैं।

उपनयन-विवाह आदि अन्यान्य संस्कारोंके समय किये जानेवाले पंचांग-पूजनके अन्तर्गत करणीय कर्मोंको विस्तारभयसे इस पुस्तकमें नहीं दिया गया है। सम्बन्धित स्थलोंपर मात्र उनका निर्देश कर दिया गया है, उसकी विधि प्रायः सर्वविदित ही है फिर भी जो जिज्ञासु पाठक उसको क्रमशः समझना चाहते हों, वे गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित पृथक् पुस्तक 'पंचांग-पूजन-पद्धति' का अवलोकन कर सकते हैं।

इस 'उपनयन-संस्कार-पद्धति' पुस्तकसे सरलतासे प्रयोग किया और कराया जा सकता है।

आशा है, पाठक महानुभावों, जिज्ञासुजनों तथा कर्मकाण्ड करानेवाले आचार्यों एवं सर्वसाधारणजनोंके लिये भी यह पुस्तक उपयोगी होगी।

—राधेश्याम खेमका

विषय-सूची

उपनयनसंस्कार-प्रयोग

वेदारम्भसंस्कार-प्रयोग

समावर्तनसंस्कार-प्रयोग

परिशिष्ट

उपनयनसंस्कार-प्रयोग

उपनयन-संस्कारसे पहले दिन अथवा उपनयन-संस्कारके दिन उपनयन-संस्कार करनेवाला कुमारका पिता (अथवा उपनयन करनेका अधिकारी[1]) सपत्नीक उपवास रखे। प्रातःकालिक शौचादि नित्य-क्रिया सम्पन्न करके मांगलिक स्नान करके धुले हुए दो वस्त्र (धोती एवं उत्तरीय) धारण करके सन्ध्यावन्दनादिसे निवृत्त होकर अल्पना आदिसे अलंकृत शुद्ध पवित्र देशमें[2] अपने आसनपर पूर्वाभिमुख बैठ जाय। अपने दाहिनी

---

१. (क) पितैवोपनयेत्पुत्रं तदभावे पितुः पिता। तदभावे पितुर्भ्राता तदभावे तु सोदरः॥

(ख) पिता पितामहो भ्राता ज्ञातयो गोत्रजाग्रजाः। उपायनेऽधिकारी स्यात् पूर्वाभावे परः परः॥

पितेति विप्रपरं न क्षत्रियवैश्ययोः। तयोस्तु पुरोहित एव उपनयनस्य दृष्टार्थत्वात्। तयोस्त्वध्यापनेऽनधिकारात्।

जिस द्विजाति बालकका उपनयन होता है, शास्त्रीय भाषामें उसे 'माणवक' कहा जाता है। उस माणवकका उपनयनसंस्कार करनेका अधिकारी कौन है, इसकी व्यवस्थामें पारस्करगृह्यसूत्र (२।२।१)-के गदाधरभाष्यमें महर्षि वृद्धगर्गके वचनसे बताया गया है कि पिता, पितामह, चाचा, सहोदर भाई, बन्धु-बान्धव तथा गोत्रके लोग उपनयन करानेके अधिकारी होते हैं। इनमें पूर्वके प्राप्त न होनेपर ही उत्तरवर्ती लोगोंको अधिकार है अर्थात् यदि पिता हैं तो पितामह आदिको उपनयन करानेका अधिकार नहीं है। यहाँ यह व्यवस्था ब्राह्मणके लिये है। क्षत्रिय-वैश्य बालकका उपनयन तो पुरोहित (आचार्य)-को ही कराना चाहिये; क्योंकि उन दोनोंको अध्यापनका शास्त्रतः अधिकार नहीं है।

२. पुण्यक्षेत्रं नदीतीरं गुहा पर्वतमस्तकम्। तीर्थप्रदेशः सिन्धूनां सङ्गमः पावनं वनम्॥

उद्यानानि विविक्तानि बिल्वमूलं तटं गिरेः। तुलसीकाननं गोष्ठं वृषशून्यशिवालयः॥

अश्वत्थामलकीमूलं गोशाला जलमध्यतः। देवतायतनं कूलं समुद्रस्य निजं गृहम्॥

ओर[१] पत्नीको बैठा ले और पत्नीके दाहिनी ओर कुमार[२] (जिसका उपनयन होना हो) बैठ जाय। तिलक लगा ले। शिखा बाँध ले।[३] रक्षादीपको प्रज्वलित कर ले।[४] पूजन-सम्बन्धी सभी सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। दोनों हाथोंकी अनामिकामें पवित्री धारणकर आचमन कर ले तथा प्राणायाम कर ले। स्वयंको तथा पूजन-सामग्रीको निम्न मन्त्रसे जल छिड़ककर पवित्र कर ले—

अपवित्रः पवित्रो वा सर्वावस्थां गतोऽपि वा। यः स्मरेत् पुण्डरीकाक्षं स बाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥

तदनन्तर हाथमें पुष्प-अक्षत लेकर निम्न शान्तिमन्त्रोंका पाठ करे—

आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतोऽदब्धासो अपरीतास उद्भिदः। देवा नो यथा सदमिद् वृधे असन्नप्रायुवो रक्षितारो दिवे दिवे॥ १॥

---

१. संस्कार्यः पुरुषो वापि स्त्री वा दक्षिणतः सदा। संस्कारकर्ता सर्वत्र तिष्ठेदुत्तरतः सदा॥
व्रतबन्धे विवाहे च चतुर्थ्यां सहभोजने। व्रते दाने मखे श्राद्धे पत्नी तिष्ठति दक्षिणे॥

२. शिशुस्त्वन्नप्राशनात्प्रागाचौलं बालकः स्मृतः। कुमारकस्तु विज्ञेयो यावन्मौञ्जीनिबन्धनम्॥

३. सदोपवीतिना भाव्यं सदा बद्धशिखेन च। विशिखो व्युपवीतश्च यत्करोति न तत्कृतम्॥
खल्वाटत्वादिदोषेण विशिखश्चेन्नरो भवेत्। कौशीं तदा धारयति ब्रह्मग्रन्थियुतां शिखाम्॥
कार्येयं सप्तभिर्दर्भैर्धार्या श्रोत्रे तु दक्षिणे

४. देवस्य दक्षिणे पार्श्वे दीपं दद्याद्यथाविधि। दीपं न स्थापयेद्भूमौ घृततैले न मिश्रयेत्॥

देवानां भद्रा सुमतिर्ऋजूयतां देवानाᳪं रातिरभि नो निवर्ततताम्। देवानाᳪं सख्यमुपसेदिमा वयं देवा न आयुः प्रतिरन्तु जीवसे॥ २॥

तान्पूर्वया निविदा हूमहे वयं भगं मित्रमदितिं दक्षमस्त्रिधम्। अर्यमणं वरुणᳪं सोममश्विना सरस्वती नः सुभगा मयस्करत्॥ ३॥

तन्नो वातो मयोभु वातु भेषजं तन्माता पृथिवी तत्पिता द्यौः। तद् ग्रावाणः सोमसुतो मयोभुवस्तदश्विना शृणुतं धिष्ण्या युवम्॥ ४॥

तमीशानं जगतस्तस्थुषस्पतिं धियञ्जिन्वमवसे हूमहे वयम्। पूषा नो यथा वेदसामसद् वृधे रक्षिता पायुरदब्धः स्वस्तये॥ ५॥

स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवाः स्वस्ति नः पूषा विश्ववेदाः। स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमिः स्वस्ति नो बृहस्पतिर्दधातु॥ ६॥

पृषदश्वा मरुतः पृश्निमातरः शुभं यावानो विदथेषु जग्मयः। अग्निजिह्वा मनवः सूरचक्षसो विश्वे नो देवा अवसागमन्निह॥ ७॥

भद्रं कर्णेभिः शृणुयाम देवा भद्रं पश्येमाक्षभिर्यजत्राः। स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवाᳪं सस्तनूभिर्व्यशेमहि देवहितं यदायुः॥ ८॥

शतमिन्नु शरदो अन्ति देवा यत्रा नश्चक्रा जरसं तनूनाम्। पुत्रासो यत्र पितरो भवन्ति मा नो मध्या

रीरिषतायुर्गन्तोः ॥ ९ ॥

अदितिर्द्यौरदितिरन्तरिक्षमदितिर्माता स पिता स पुत्रः। विश्वे देवा अदितिः पञ्च जना अदितिर्जातमदितिर्जनित्वम् ॥ १० ॥

द्यौः शान्तिरन्तरिक्षꣳ शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः। वनस्पतयः शान्तिर्विश्वे देवाः शान्तिर्ब्रह्म शान्तिः सर्वꣳ शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि ॥ ११ ॥

यतो यतः समीहसे ततो नो अभयं कुरु। शं नः कुरु प्रजाभ्योऽभयं नः पशुभ्यः ॥ १२ ॥

सुशान्तिर्भवतु।

ॐ लक्ष्मीनारायणाभ्यां नमः। ॐ उमामहेश्वराभ्यां नमः। ॐ वाणीहिरण्यगर्भाभ्यां नमः। ॐ शचीपुरन्दराभ्यां नमः। ॐ मातापितृचरणकमलेभ्यो नमः। ॐ इष्टदेवताभ्यो नमः। ॐ कुलदेवताभ्यो नमः। ॐ ग्रामदेवताभ्यो नमः। ॐ स्थानदेवताभ्यो नमः। ॐ वास्तुदेवताभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः। ॐ सर्वेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो नमः। ॐ सिद्धिबुद्धिसहिताय श्रीमन्महागणाधिपतये नमः—

कहकर देवोंको प्रणाम करे और हाथमें पुष्पाक्षत लेकर निम्न मन्त्रोंका पाठ करे—

सुमुखश्चैकदन्तश्च कपिलो गजकर्णकः। लम्बोदरश्च विकटो विघ्ननाशो विनायकः॥
धूम्रकेतुर्गणाध्यक्षो भालचन्द्रो गजाननः। द्वादशैतानि नामानि यः पठेच्छृणुयादपि॥

विद्यारम्भे विवाहे च प्रवेशे निर्गमे तथा। संग्रामे संकटे चैव विघ्नस्तस्य न जायते॥
शुक्लाम्बरधरं देवं शशिवर्णं चतुर्भुजम्। प्रसन्नवदनं ध्यायेत् सर्वविघ्नोपशान्तये॥
अभीप्सितार्थसिध्यर्थं पूजितो यः सुरासुरैः। सर्वविघ्नहरस्तस्मै गणाधिपतये नमः॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्ये शिवे सर्वार्थसाधिके। शरण्ये त्र्यम्बके गौरि नारायणि नमोऽस्तु ते॥
सर्वदा सर्वकार्येषु नास्ति तेषाममङ्गलम्। येषां हृदिस्थो भगवान् मङ्गलायतनं हरिः॥
तदेव लग्नं सुदिनं तदेव ताराबलं चन्द्रबलं तदेव। विद्याबलं दैवबलं तदेव लक्ष्मीपते तेऽङ्घ्रियुगं स्मरामि॥
लाभस्तेषां जयस्तेषां कुतस्तेषां पराजयः। येषामिन्दीवरश्यामो हृदयस्थो जनार्दनः॥
यत्र योगेश्वरः कृष्णो यत्र पार्थो धनुर्धरः। तत्र श्रीर्विजयो भूतिर्ध्रुवा नीतिर्मतिर्मम॥
अनन्याश्चिन्तयन्तो मां ये जनाः पर्युपासते। तेषां नित्याभियुक्तानां योगक्षेमं वहाम्यहम्॥
स्मृतेः सकलकल्याणभाजनं यत्र जायते। पुरुषं तमजं नित्यं व्रजामि शरणं हरिम्॥
सर्वेष्वारम्भकार्येषु त्रयस्त्रिभुवनेश्वराः। देवा दिशन्तु नः सिद्धिं ब्रह्मेशानजनार्दनाः॥
विनायकं गुरुं भानुं ब्रह्मविष्णुमहेश्वरान्। सरस्वतीं प्रणम्यादौ सर्वकामार्थसिद्धये॥
विश्वेशं माधवं ढुण्ढिं दण्डपाणिं च भैरवम्। वन्दे काशीं गुहां गङ्गां भवानीं मणिकर्णिकाम्॥

हाथके अक्षत-पुष्प सामने छोड़ दे।

प्रायश्चित्त-गोदानका प्रतिज्ञासंकल्प[१] —सर्वप्रथम उपनयनसंस्कारसे पूर्व गर्भाधानादि अन्य संस्कारोंके न किये जानेसे उत्पन्न प्रत्यवायोंके परिहारके लिये प्रायश्चित्तस्वरूप गोदान अथवा गोनिष्क्रय-द्रव्यका प्रतिज्ञासंकल्प निम्न रीतिसे करना चाहिये। दाहिने हाथमें जल-पुष्पाक्षतादि लेकर बोले—

ॐ विष्णुर्विष्णुर्विष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्ञया प्रवर्तमानस्य ब्रह्मणो द्वितीयपरार्धे श्रीश्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्वन्तरे अष्टाविंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमचरणे जम्बूद्वीपे भारतवर्षे आर्यावर्तैकदेशे (यदि काशी हो तो **अविमुक्तवाराणसीक्षेत्रे आनन्दवने गौरीमुखे त्रिकण्टकविराजिते महाश्मशाने भगवत्या उत्तरवाहिन्या भागीरथ्या वामभागे**) ....**नगरे/ग्रामे/क्षेत्रे षष्टि-संवत्सराणां मध्ये** ....**संवत्सरे** ....**अयने** ....**ऋतौ** ....**मासे** ....**पक्षे** ....**तिथौ** ....**नक्षत्रे** ....**योगे** ....**करणे** ....**वासरे** ....**राशिस्थिते सूर्ये** ....**राशिस्थिते चन्द्रे शेषेषु ग्रहेषु यथायथाराशिस्थानस्थितेषु सत्सु एवं ग्रहगुणगणविशिष्टे शुभमुहूर्ते** ....**गोत्रः सपत्नीकः** ....**शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अस्य कुमारस्य गर्भाधान-पुंसवन-सीमन्तोन्नयन-जातकर्म-नामकरण-निष्क्रमणान्नप्राशन-चूडाकरण-संस्काराणां स्व-स्वकालेऽकृतानां कालातिपत्तिदोषपरिहारेण व्रात्यदोषपरिहारद्वारा/उच्छिन्नयज्ञोपवीतसंस्कारपरम्परादोषपरिहारार्थं**[२] **उपनयनाधिकारसिद्धिद्वारा**

१-प्रायश्चित्तसंकल्पमें एकसे अधिक गोदान करनेकी भी विधि है। अपनी शक्तिके अनुसार गोदानका निष्क्रय द्रव्य देना चाहिये। सामान्यतया एक गौका निष्क्रय द्रव्य चाँदीका सवा रुपया मानते हैं।

२-जिन लोगोंका जनेऊ निर्धारित समयपर नहीं हुआ, वे '**व्रात्यदोषपरिहारद्वारा**' शब्द संकल्पमें जोड़ लें तथा जिनके पिताका यज्ञोपवीत-संस्कार न हुआ हो, वे '**उच्छिन्नयज्ञोपवीतसंस्कारपरम्परादोषपरिहारार्थं**' शब्द संकल्पमें जोड़ लें।

श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं कृच्छ्रात्मकं प्रायश्चित्तं गोनिष्क्रयद्रव्यदानप्रत्याम्नायेन करिष्ये। कहकर संकल्प छोड़ दे।

हाथमें द्रव्यको ग्रहणकर **'देयद्रव्याय नमः'** कहकर गन्धादिद्वारा उसका पूजन कर ले और दानका निम्न संकल्प करे—

दानका संकल्प—ॐ अद्य ममास्य कुमारस्य संकल्पितनानादोषपरिहारार्थं कृच्छ्रप्रायश्चित्तप्रत्याम्नाय-भूतगोनिष्क्रयद्रव्यदानद्वारेण उपनयनाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये गोनिष्क्रयद्रव्यं ....नाम ....गोत्राय ....ब्राह्मणाय भवते सम्प्रददे (यदि बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** बोले)।

ऐसा कहकर निष्क्रय-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे और निम्न प्रार्थना करे—

गोप्रार्थना—यज्ञसाधनभूता या विश्वस्याघौघनाशिनी। विश्वरूपधरो देवः प्रीयतामनया गवा॥

गायत्री-जपहेतु ब्राह्मणवरण—गणेशाम्बिकाका स्मरणात्मक पूजन करनेके अनन्तर गायत्री-जपहेतु ब्राह्मणोंका वरण करे। पिता आदि आचार्य गायत्री-उपदेश देनेकी अधिकार-प्राप्तिके लिये स्वयं अथवा वृत ब्राह्मणके द्वारा द्वादश सहस्र, द्वादशाधिक सहस्र अथवा अयुतगायत्री जप कराये, उसके लिये निम्न संकल्प करे और ब्राह्मणका वरण करे—

ॐ अद्य मम गायत्र्युपदेशाधिकारसिद्ध्यै ....यथासंख्याकं* गायत्रीजपं ब्राह्मणद्वारा कारयिष्ये।

प्रधान संकल्प—हाथमें जलाक्षतादि लेकर एक साथ तीनों संस्कारों (उपनयन, वेदारम्भ तथा समावर्तन)-का निम्न संकल्प करे—

---

* समय एवं सामर्थ्य होनेपर कुछ ब्राह्मणोंको बैठाकर दस हजार, बारह हजार संख्या तथा इससे अधिक अथवा यथाशक्ति गायत्रीमन्त्रजप करा सकते हैं।

ॐ अद्य ....शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं अस्य कुमारस्य* द्विजत्वसिद्ध्या वेदाध्ययनाद्यधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये उपनयनसंस्कारं श्रौतस्मार्तकर्मानुष्ठानाधिकारप्राप्तिपूर्वकब्रह्मवर्चससिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं वेदारम्भसंस्कारं गृहस्थाश्रमार्हतासिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीत्यर्थं समावर्तनसंस्कारं च करिष्ये।

हाथका जलाक्षतादि छोड़ दे, पुनः हाथमें जल लेकर पंचांगपूजनका निम्न संकल्प करे—

पंचांग-पूजन—तत्पूर्वाङ्गत्वेन अस्य कुमारस्य करिष्यमाणोपनयनवेदारम्भसमावर्तनसंस्काराणां विहितं तन्त्रेण गणेशाम्बिकयोः पूजनं स्वस्तिपुण्याहवाचनं मातृकापूजनं वसोर्धारापूजनं आयुष्यमन्त्रजपमाभ्युदयिकश्राद्धं च करिष्ये।

ऐसा संकल्प करके गणेशाम्बिकापूजन, कलशस्थापन, स्वस्ति-पुण्याहवाचन, मातृकापूजन, वसोर्धारापूजन, आयुष्यमन्त्रजप तथा सांकल्पिक विधिसे आभ्युदयिक श्राद्ध करे। [**पंचांग-पूजनकी पूर्णविधि गीताप्रेसद्वारा प्रकाशित पृथक् पुस्तक** 'पंचांग-पूजन-पद्धति' **में दी गयी है।**]

उपनयनसंस्कार करनेकी योग्यता प्राप्त करनेके लिये गोदान—उपनयन-संस्कारसे पूर्व कुमारका पिता आदि स्वयंकी उपनयन-कर्ममें योग्यताप्राप्तिके लिये प्रायश्चित्तस्वरूप गोदान (निष्क्रयद्रव्य-दान)-का संकल्प करे—**ॐ अद्य मम सकलपापक्षयपूर्वकमस्य कुमारस्य उपनयनकर्मणि मम उपनेतृत्वाधिकारसिद्धिद्वारा श्रीपरमेश्वरप्रीतये कृच्छ्रत्रयप्रत्याम्नायभूतगोत्रयनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....ब्राह्मणाय सम्प्रददे**—ऐसा संकल्पकर निष्क्रय-द्रव्य ब्राह्मणको दे दे।

* दो बालक हों तो '**अनयोः कुमारयोः**' तथा तीन या तीनसे अधिक हों तो संकल्पमें '**एषां कुमाराणाम्**' शब्द बोलना चाहिये।

बटुकका प्रवेश

इसके बाद हाथमें अक्षत और फल लिये हुए बटुकको आचार्यके समीप लाये। बटुक अभीतक किये गये मनमाने आचरण, भाषण और भक्षण आदि दोषोंके परिहारके लिये तथा उपनयन-संस्कारकी योग्यतासिद्धिके लिये प्रायश्चित्तके रूपमें गोदान (गोनिष्क्रयद्रव्य)-का संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....बटुकोऽहं कामचारकामवादकामभक्षणादिदोषपरिहारेण स्वस्योपनेयत्वाधिकारसिद्ध्ये कृच्छ्रत्रयप्रत्याम्नायगोत्रयनिष्क्रयद्रव्यं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्राह्मणाय सम्प्रददे। (यदि बादमें देना हो तो **दातुमुत्सृज्ये** बोले)।

ब्राह्मणको गोदान (गोनिष्क्रयद्रव्य) दे।

केशाधिवासन एवं मुण्डन—नापितद्वारा मुण्डनका विधान पृ०सं० २७ से आगे दिया गया है। यहाँपर अधिवासन तथा केशवपन (मुण्डन)-की पूर्ण विधि कोष्ठकके भीतर लिखी गयी है, यथासम्भव उसे करना चाहिये।

[स्नानादिसे निवृत्त उपनयन किये जानेवाले बालक (माणवक)-के सिरके बालोंको संकल्पित जलसे विधिपूर्वक भिगोकर तथा जूड़ा बनाकर कपड़ेसे बाँधकर आच्छादित करनेका कर्म अधिवासन कहलाता है। यह कर्म प्रायः उपनयनके पहले दिन रात्रिमें किया जाता है, यदि पहले दिन सम्भव न हो तो उपनयनके दिन भी प्रारम्भमें किया जा सकता है। इसमें नये पीले वस्त्रके द्वादश खण्ड करके प्रत्येकमें गन्ध, अक्षत, दूर्वा, पीली सरसों तथा हल्दी (गाँठवाली) छोड़कर त्रिगुणित सूतके द्वारा बाँधकर

बारह पोटलिका बना लेनी चाहिये। इन पोटलिकाओंको '**गणाधिपं नमस्कृत्य**'* इत्यादि मन्त्रोंसे प्रतिष्ठित करके एक पोटलिकाके द्वारा बालककी शिखाके स्थानवाले बालोंको दृढ़तापूर्वक बाँध लेना चाहिये। तदनन्तर बालकके दाहिनी ओरके बालोंकी तीन जूटिका बनाकर एक-एक पोटलिकासे उन्हें बाँध देना चाहिये, इसी प्रकार सिरके पीछे तथा फिर बायीं ओर भी तीन-तीन जूटिका बनाकर उन्हें एक-एक पोटलीसे बाँध देना चाहिये। इस प्रकार बालकके सिरके बालोंके दस जूड़े बन जायँगे। इस प्रकार जूड़ा बनाकर किसी कपड़े अथवा पगड़ीद्वारा बालकके सिरको अच्छी प्रकारसे ढँक देना चाहिये। शेष दो पोटलिकामेंसे एक छूरेमें तथा एक कैंचीमें बाँध देना चाहिये।

बटुकके मुण्डनका संकल्प—इसके बाद आचार्य बटुकके मुण्डनके लिये दाहिने हाथमें जलाक्षतादि लेकर संकल्प करे—**ॐ अद्य अस्य कुमारस्योपनयनाङ्गभूतं वपनं करिष्ये।** कहकर हाथमें लिये जल-अक्षत छोड़ दे। इसके बाद भोजनसे पूर्व ही बटुककी शिखाको छोड़कर निम्न रीतिसे मुण्डन कराये—

* ॐ गणाधिपं नमस्कृत्य नमस्कृत्य पितामहम्। विष्णुं रुद्रं श्रियं देवीं वन्दे भक्त्या सरस्वतीम्॥
स्थानाधिपं नमस्कृत्य ग्रहनाथं निशाकरम्। धरणीगर्भसम्भूतं शशिपुत्रं बृहस्पतिम्॥
दैत्याचार्यं नमस्कृत्य सूर्यपुत्रं महाग्रहम्। राहुं केतुं नमस्कृत्य यज्ञारम्भे विशेषतः॥
शक्राद्या देवताः सर्वा मुनींश्चैव तपोधनान्। गर्गं मुनिं नमस्कृत्य नारदं मुनिसत्तमम्॥
वसिष्ठं मुनिशार्दूलं विश्वामित्रं च गोभिलम्। व्यासं मुनिं नमस्कृत्य सर्वशास्त्रविशारदम्॥
विद्याधिका ये मुनय आचार्याश्च तपोधनाः। तान् सर्वान् प्रणमाम्येवं यज्ञरक्षाकरान् सदा॥

सर्वप्रथम बालकके काटे जानेवाले केशोंका संस्कार करनेके लिये निम्न रीतिसे जलको शोधित करे—

पूर्वस्थापित शीतल जलको गरम जलमें यह मन्त्र बोलते हुए मिलाये—

ॐ उष्णेन वाय उदकेनेह्यदिते केशान् वप।

पुनः मौन होकर उस जलमें थोड़ा मट्ठा डालकर पूर्व स्थापित घृत, दही या मक्खनके पिण्डमेंसे भी थोड़ा पिण्ड बनाकर जलमें डाल दे।

(क) दाहिने भागका केशसंस्कार

केशोंका उन्दन (भिगोना)—तदनन्तर उत्तरकी ओर मुख किया हुआ बालकका पिता अपने वामभागमें बैठी हुई भार्याके दक्षिण भागमें स्थित पूर्वाभिमुख बालकके दाहिने भागमें बाँधी हुई तीनों जूटिकाओंमेंसे दक्षिण तरफवाली पहली जूटिकाको निम्न मन्त्र पढ़ते हुए शीतोदक, उष्णोदक, मट्ठा और दधिमिश्रित जलसे भिगोये—

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चसे।

कुशोंद्वारा बन्धन—इसके बाद दक्षिण तरफकी पहली जूटिका (जूड़े)-को साहीके काँटेसे सुलझा ले। पूर्वस्थापित सत्ताईस कुशोंमेंसे तीन कुश लेकर उनके अग्रभागको पहली जूटिकाके साथ लगाकर (कुशका मूल भाग ऊपर करते हुए) इस मन्त्रसे बाँध दे—**ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳ सीः।**

उस्तराग्रहण—इसके बाद कुशयुक्त केशोंको बाँयें हाथसे पकड़कर निम्न मन्त्र बोलकर उस्तरे (छुरे)-को दाहिने हाथमें ग्रहण करे—

शिवो नामासि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳ सीः।

उस्तरेद्वारा बालोंका स्पर्श—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे उस उस्तरेको पहली जूटिकाके बालोंमें लगाये—

ॐ नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।

जूटिकाछेदन—पुनः निम्नलिखित मन्त्रसे कुशोंसमेत बालोंकी पहली जूटिका (जूड़ा)-को काटे—

ॐ येनावपत्सविता क्षुरेण सोमस्य राज्ञो वरुणस्य विद्वान्। तेन ब्रह्माणो वपतेदमस्यायुष्यं जरदष्टिर्यथाऽसत्।

केशस्थापन—इसके बाद पिता उन कुशसहित काटे हुए बालोंके अग्रभागको आगेकी ओर करता हुआ शिशुकी माताको दे और माता काँस्यपात्रमें रखे हुए उत्तरकी ओर स्थापित बैलके गोबरपर उन्हें रख दे। पिता कटे हुए केशोंका स्पर्श होनेसे जलका स्पर्श कर ले।

इसके बाद दाहिनी ओरकी दोनों जूटिकाओंका पूर्वोक्त रीतिसे जलद्वारा भिगोना, साहीके काँटेद्वारा बालोंको सुलझाना, जूड़ेमें कुशोंको बाँधना, बालोंसे उस्तरेका स्पर्श कराना तथा बालोंको काटना और उन्हें गोमयपिण्डपर रखना आदि सभी कार्य बिना मन्त्र पढ़े (अमन्त्रक) पूर्ववत् सम्पन्न करे।

(ख) पिछले भागका केशसंस्कार

इसके बाद पिछले भागकी जूटिकाका संस्कार निम्न मन्त्रोंसे करे।

केशोंका उन्दन—सर्वप्रथम पिछले भागकी जूटिकामेंसे दाहिनी ओरकी पहली जूटिकाको निम्न मन्त्रसे भिगोये—

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चसे।

कुशोंद्वारा बन्धन—तदनन्तर केशोंको बिना मन्त्रके साहीके काँटेसे अलग-अलग करके पूर्वोक्त रीतिसे तीन कुशोंको निम्न मन्त्रसे जूटिकामें बाँधे—

ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳ सीः।

उस्तराग्रहण—निम्न मन्त्रसे ताँबेसे शोधित लोहेका छुरा हाथमें ग्रहण करे—

ॐ शिवो नामाऽसि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳ सीः।

उस्तरेद्वारा बालोंका स्पर्श—छुरेको निम्न मन्त्रसे केशोंमें लगाये—

ॐ नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।

जूटिकाछेदन—निम्न मन्त्रसे केशोंका वपन (छेदन) करे—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः कश्यपस्य त्र्यायुषम्। ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्॥

केशस्थापन—जलका स्पर्श करे। इस प्रकार पिछले भागकी पहली जूटिकाका छेदन करके उन बालोंको पूर्वकी भाँति माताके द्वारा गोमयपिण्डपर रखवा दे।

तदनन्तर पिछले भागकी बची हुई दो जूटिकाओंकी भी दो बार बिना मन्त्र पढ़े सभी क्रियाएँ करे। अर्थात् केशोंका भिगोना, साहीके काँटोंद्वारा अलग-अलग करना, उसमें कुशोंको बाँधना, छुरेद्वारा स्पर्श करते हुए केशोंको काटकर गोमयपिण्ड (गोबर)-में रखना आदि।

(ग) बायें भागका केशसंस्कार

इसके बाद बायें भागकी तीनों जूटिकाओंका संस्कार करना चाहिये।

केशोंका उन्दन—सर्वप्रथम दाहिनी ओरकी पहली जूटिकाको निम्न मन्त्रसे जलद्वारा भिगोये—

ॐ सवित्रा प्रसूता दैव्या आप उन्दन्तु ते तनूं दीर्घायुत्वाय वर्चसे।

कुशोंद्वारा बन्धन—तदनन्तर साहीके काँटेसे मौन हो बालोंको अलग करे और केशोंके बीचमें निम्न मन्त्रसे पूर्वोक्त रीतिसे तीन कुशोंको बाँधे—

ॐ ओषधे त्रायस्व स्वधिते मैनꣳ हिꣳसीः।

उस्तराग्रहण—निम्न मन्त्रसे छुरेको हाथमें ले—

ॐ शिवो नामाऽसि स्वधितिस्ते पिता नमस्ते अस्तु मा मा हिꣳसीः।

उस्तरेद्वारा बालोंका स्पर्श—तदनन्तर निम्न मन्त्रसे छुरेको केशोंके मध्यमें लगाये—

ॐ नि वर्त्तयाम्यायुषेऽन्नाद्याय प्रजननाय रायस्पोषाय सुप्रजास्त्वाय सुवीर्याय।

जूटिकाछेदन—निम्न मन्त्रसे केशोंका छेदन करे—

ॐ येन भूरिश्चरा दिवं ज्योक्च पश्चाद्धि सूर्यम्। तेन ते वपामि ब्रह्मणा जीवातवे जीवनाय सुश्लोक्याय स्वस्तये। तदनन्तर जलका स्पर्श करे।

केशस्थापन—इसके बाद काटे गये केशोंको पूर्ववत् माताके द्वारा गोमयपिण्डपर रखवा दे।

इसी प्रकार पुनः बची हुई जूटिकाओंकी कर्तनकी पूरी प्रक्रिया अमन्त्रक करनी चाहिये। अर्थात् केशोंको गीला करना, साहीके काँटेसे अलग करना, केशोंके मध्य तीन कुशा रखना, छुरेको हाथमें लेना, छुरेको केशोंके मध्यमें लगाना, केशोंका छेदन करना, जलस्पर्श करना तथा बालोंको गोमयपिण्डमें रखवाना आदि।

इस प्रकार कुल नौ बार पिता या आचार्य केश-छेदनकी प्रक्रिया पूर्ण करे।

छुरभ्रमण—इसके बाद सिरके चारों ओर निम्न मन्त्रसे प्रदक्षिण क्रमसे तीन बार छुरेको घुमाये। पहली बार समन्त्रक तथा दो बार अमन्त्रक। पहली बार निम्न मन्त्रसे छुरा घुमाये—

ॐ यत्क्षुरेण मज्जयता सुपेशसा वप्त्वा वा वपति केशाँश्छिन्धि शिरो माऽस्यायुः प्रमोषीः।]

नापितको छुरप्रदान—घृतादि मिले बचे हुए शीतल और उष्ण जलसे सारे सिरको भिगोकर सुखपूर्वक

मुण्डनके लिये निम्न मन्त्र कहकर नापितको छुरा दे दे—**ॐ अक्षण्वन् परिवप।**

इसके बाद नापित (नाई) उत्तराभिमुख बैठकर पूर्वाभिमुख बालकके सिरका पूर्वभागसे प्रारम्भकर अथवा उत्तरभागसे आरम्भकर बालोंका मुण्डन करे तथा अपनी कुलपरम्परा या गोत्रके अनुसार शिखा (या चोटी) रखे।

केशस्थापन—इसके बाद उन सभी काटे गये केशोंको गोमयपिण्डमें रखकर गोशाला, कीचड़युक्त गड्ढे या नदीके समीपमें गाड़ दे।

तदनन्तर स्नान कराकर वस्त्रधारण कराकर पुष्पमालादिसे अलंकृतकर बटुकको बैठाये।

ब्राह्मणभोजनसंकल्प—इसके बाद तीन ब्राह्मणोंको भोजन करानेके लिये दाहिने हाथमें जलाक्षतादि लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य अस्य कुमारस्योपनयनाख्ये कर्मणि पूर्वाङ्गत्वेन त्रीन् ब्राह्मणान् भोजयिष्यामि। भोजनपर्याप्तं मिष्टान्नं तन्निष्क्रयद्रव्यं वा दास्ये। ऐसा कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

तदनन्तर तीन ब्राह्मणोंको भोजन कराये। कुमारको भी क्षार-लवणरहित पायस (खीर) आदि मधुर भोजन कराये।

अग्निस्थापनसंकल्प—इसके बाद आचार्य दाहिने हाथमें जलाक्षतादि लेकर अग्निस्थापनका* संकल्प करे—

ॐ अद्य अस्मिन्नुपनयनकर्मणि समुद्भवनामाग्नेः स्थापनं करिष्ये। कहकर जल-अक्षत छोड़ दे।

* अग्निको अरणिमन्थनद्वारा प्रकट करने अथवा सुवासिनीद्वारा लानेका विधान है।

वेदीनिर्माण

सुविधाकी दृष्टिसे उपनयन, वेदारम्भ तथा समावर्तन-संस्कारके लिये तीन वेदी बनाये और एक साथ तीनोंका पंचभूसंस्कार निम्न रीतिसे कर ले। पहले उपनयनवेदी तदनन्तर वेदारम्भवेदी और फिर समावर्तन-वेदीका संस्कार करे।

पंच-भूसंस्कार

(१) परिसमूहन—तीन कुशोंके द्वारा दक्षिणसे उत्तरकी ओर वेदीको साफ करे और उन कुशोंको ईशानकोणमें फेंक दे। (**त्रिभिर्दर्भैः परिसमुह्य तान् कुशानैशान्यां परित्यज्य**)

(२) उपलेपन—गायके गोबर तथा जलसे वेदीको लीप दे। (**गोमयोदकेनोपलिप्य**)

(३) उल्लेखन या रेखाकरण—स्रुवाके मूलसे वेदीके मध्य भागमें प्रादेशमात्र (अँगूठेसे तर्जनीके बीचकी दूरी) लम्बी तीन रेखाएँ पश्चिमसे पूर्वकी ओर खींचे। रेखा खींचनेका क्रम दक्षिणसे प्रारम्भकर उत्तरकी ओर होना चाहिये। (**स्फ्येन, स्रुवमूलेन, कुशमूलेन वा त्रिरुल्लिख्य**)

(४) उद्धरण—उन खींची गयी तीनों रेखाओंसे उल्लेखन-क्रमसे अनामिका तथा अंगुष्ठके द्वारा थोड़ी-थोड़ी मिट्टी निकालकर बायें हाथमें रखता जाय। बादमें सब मिट्टी दाहिने हाथपर रखकर ईशानकोणकी ओर फेंक दे। (**अनामिकाङ्गुष्ठाभ्यां मृदमुद्धृत्य**)

(५) अभ्युक्षण या सेचन—तदनन्तर गंगा आदि पवित्र नदियोंके जलके छींटोंसे वेदीको पवित्र करे। (जलेनाभ्युक्ष्य)

अग्निस्थापन—इसके बाद सुवासिनीके द्वारा लायी गयी प्रदीप्त, निर्धूम अग्निकी स्थापना उपनयन-वेदीपर निम्न मन्त्रसे करे—**ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।**

अग्निके ऊपर उसकी रक्षाके लिये कुछ काष्ठ आदि डाल दे और अग्निको प्रज्वलित करे।

बटुकका संस्कार

इसके बाद बटुकको आचार्यके समीप लाये। बटुक आचार्यके दक्षिण भागमें और अग्निके पश्चिम भागमें आसनपर बैठ जाय। तब आचार्य निम्न मन्त्र पढ़कर बटुकको प्रतिष्ठित करे—

ॐ मनो जूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्यज्ञमिमन्तनो त्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमन्दधातु। विश्वेदेवास इह मादयन्तामों प्रतिष्ठ॥

इसके बाद आचार्य बटुकसे निम्न वाक्य कहलाये—**ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्।**

बटुक बोले—**ॐ ब्रह्मचर्यमागाम्।**

पुनः आचार्य बटुकसे यह कहलाये—**ॐ ब्रह्मचार्यसानि।**

बटुक बोले—ॐ **ब्रह्मचार्यसानि।**

बटुकको कटिसूत्र और कौपीन धारण कराना—

इसके बाद आचार्य मौन हो बटुकको कटिसूत्र धारण कराये। तदनन्तर निम्न मन्त्र बोलते हुए कौपीन वस्त्र धारण कराये—

ॐ येनेन्द्राय बृहस्पतिर्वासः पर्यदधादमृतम्। तेन त्वा परि दधाम्यायुषे दीर्घायुत्वाय बलाय वर्चसे॥

इसके बाद दो बार आचमन कराये।[1]

मेखलाबन्धन—इसके बाद आचार्य बटुकको खड़ाकर उसके कटिप्रदेशमें प्रदक्षिण क्रमसे तीन आवृतकर प्रवरके नियमानुसार तीन या पाँच गाँठ बाँधकर निम्न मन्त्रसे ब्राह्मणको मुंजकी, क्षत्रियको प्रत्यंचाकी और वैश्यको शणकी मेखला धारण कराये[2]—

ॐ इयं दुरुक्तं परि बाधमाना वर्णं पवित्रं पुनती मऽआऽगात्। प्राणापानाभ्यां बलमादधाना स्वसा देवी सुभगा मेखलेयम्।

१-(क) द्विवारं तालुस्पर्शगामिजलप्राशनमात्रम् न तु त्रिरावृत्तहृदयस्पर्शगामिजलप्राशनस्य द्विरावृत्तिः। (संस्कारदीपक)

(ख) ॐ केशवाय नमः, ॐ नारायणाय नमः, ॐ माधवाय नमः—कहकर आचमन करे और ॐ हृषीकेशाय नमः—कहकर हाथ धोये। आचमनका जल तालुमात्रको स्पर्श करे। इसी प्रकार एक बार आचमन और करे।

२-मौञ्जी मेखला त्रिवृता ग्रन्थयश्च प्रवरसंख्यया।

त्रिवृन्मौञ्जी समा श्लक्ष्णा कार्या विप्रस्य मेखला। क्षत्रियस्य तु मौर्वी ज्या वैश्यस्य शणतस्तथा॥

शिखाबन्धन—प्रणवपूर्वक गायत्रीमन्त्रसे बटुककी शिखा बाँधे।

यज्ञोपवीतसहित अष्ट भाण्डदान—इसके बाद यज्ञोपवीतधारणकी योग्यता प्राप्त करनेके लिये बटुक यज्ञोपवीत और चावलसे पूर्ण दक्षिणासहित आठ पात्रों (भाण्डों)-के दानका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ...गोत्रः ...बटुकोऽहं स्वकीयोपनयनकर्मविषयकसत्संस्कारप्राप्त्यर्थं तथा च द्विजत्वसिद्धिवेदाध्ययनाधिकारसिध्यर्थं यज्ञोपवीतधारणार्थं च श्रीसवितृनारायणप्रीतये इमान्यष्टौ भाण्डानि सयज्ञोपवीतफलाक्षतदक्षिणासहितानि यथानामगोत्रेभ्यो ब्राह्मणेभ्यो दातुमुत्सृज्ये।

—इस प्रकार संकल्प बोलकर पात्रोंको ब्राह्मणोंको दे दे और यज्ञोपवीत-धारणकी निम्न प्रक्रिया सम्पन्न करे—

यज्ञोपवीतका संस्कार—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यज्ञोपवीतका प्रक्षालन करे—

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ १॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ २॥
तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ३॥

यज्ञोपवीतका अभिमन्त्रण—तदनन्तर आचार्य यज्ञोपवीतकी गाँठका स्पर्शकर निम्न मन्त्रसे अभिमन्त्रण करे—

ॐ प्राणानां ग्रन्थिरसि रुद्रो मा विशान्तकः। तेनान्नेनाप्यायस्व॥

यज्ञोपवीतमें देवताओंका पूजन—इसके बाद यज्ञोपवीतको '**ॐ भूर्भुवः स्वरोम्**' कहकर किसी

पात्रमें रखकर '**एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥**' इस मन्त्रसे प्रतिष्ठित करे। तदनन्तर निम्न मन्त्रोंको पढ़कर यज्ञोपवीतके नवों तन्तुओंमें अक्षत छोड़कर आवाहन करे तथा **गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि** कहते हुए नौ तन्तुओंमें अधिष्ठित देवताओंका गन्धाक्षतपुष्पसे पूजन करे—

१-ॐ ओंकारदैवत्याय प्रथमतन्तवे नमः।
२-ॐ अग्निदैवत्याय द्वितीयतन्तवे नमः।
३-ॐ नागदैवत्याय तृतीयतन्तवे नमः।
४-ॐ सोमदैवत्याय चतुर्थतन्तवे नमः।
५-ॐ इन्द्रदैवत्याय पञ्चमतन्तवे नमः।
६-ॐ प्रजापतिदैवत्याय षष्ठतन्तवे नमः।
७-ॐ वायुदैवत्याय सप्तमतन्तवे नमः।
८-ॐ सूर्यदैवत्याय अष्टमतन्तवे नमः।
९-ॐ विश्वेदेवदैवत्याय नवमतन्तवे नमः।

ग्रन्थियोंके अधिदेवताओंका पूजन—आचार्य निम्न मन्त्रोंसे यज्ञोपवीतकी तीनों ग्रन्थियोंका '**गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि**' कहकर गन्धाक्षतपुष्प छोड़ते हुए क्रमसे पूजन करे—

१-ॐ ब्रह्म जज्ञानं प्रथमं पुरस्ताद्वि सीमतः सुरुचो वेन आवः। स बुध्न्या उपमा अस्य विष्ठाः सतश्च योनिमसतश्च वि वः॥ ॐ ब्रह्मणे नमः।

२-इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा नि दधे पदम्। समूढमस्य पाꣳसुरे स्वाहा॥ ॐ विष्णवे नमः।

३-ॐ नमस्ते रुद्र मन्यव उतो त इषवे नमः। बाहुभ्यामुत ते नमः॥ ॐ ईश्वराय नमः।

समग्र यज्ञोपवीतके अधिदेवताका '**ॐ परब्रह्मणे नमः**' कहकर पूजन करे।

सूर्यदर्शन—इसके बाद यज्ञोपवीतको हाथमें लेकर उसे सूर्यको निम्न मन्त्रसे दिखाये—

ॐ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च।
हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्॥

श्रीसूर्यनारायणाय नमः।

यज्ञोपवीतका अभिमन्त्रण—इसके बाद **ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥** इन मन्त्रोंसे यज्ञोपवीतका जलसे मार्जन करे तथा दस बार गायत्रीमन्त्रसे उसे अभिमन्त्रित करे।

यज्ञोपवीतधारण विनियोग—आचार्य हाथमें जल लेकर निम्न प्रकारसे विनियोगमन्त्र बोले—

ॐ यज्ञोपवीतमित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः। यह कहकर जल छोड़े।

यज्ञोपवीतधारण—इसके बाद आचार्य निम्न मन्त्र बोलता हुआ गणेश आदि देवताओंको स्पर्श कराकर बटुकके दक्षिण बाहुको ऊपरकर बायें कन्धेपर यज्ञोपवीत पहनाये—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्
आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥
यज्ञोपवीतमसि यज्ञस्य त्वा यज्ञोपवीतेनोपनह्यामि।

आचमन—बटुक प्रत्येक यज्ञोपवीत धारण करनेके बाद पूर्वरीति (पृ०-सं० ३१)-के अनुसार दो बार आचमन करे।

मृगचर्मधारण—तदनन्तर आचार्य मौन होकर बटुकको उत्तरीयके रूपमें धारण करनेके लिये मृगचर्म दे और बटुक निम्न मन्त्र बोलता हुआ उसे यज्ञोपवीतकी भाँति धारण करे—

ॐ मित्रस्य चक्षुर्द्धरुणं बलीयस्तेजो यशस्वी स्थविरꣳसमिद्धम्।
अनाहनस्यं वसनं जरिष्णुः परीदं वाज्यजिनं दधेऽहम्॥

दण्डधारण—इसके बाद आचार्य मौन होकर पैरसे लेकर मस्तकतक लम्बा पलाश दण्ड बटुकको दे। यह दण्ड ब्राह्मणके लिये केशपर्यन्त, क्षत्रियके लिये ललाटपर्यन्त और वैश्यके लिये नासिका (नाक)-पर्यन्त होता है। बटुक निम्न मन्त्र बोलता हुआ उसे ग्रहण करे—

ॐ यो मे दण्डः परापतद्वैहायसोऽधिभूम्याम्।
तमहं पुनरादद आयुषे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय॥

बटुक दण्डको निम्न मन्त्र बोलता हुआ ऊपर उठाये—

ॐ उच्छ्रयस्व वनस्पत ऊर्ध्वो मा पाह्यᳪं हसऽ आऽस्य यज्ञस्योदृचः॥

अंजलिपूरण—इसके बाद आचार्य जलसे अपनी अंजलि भरकर निम्न तीन मन्त्र पढ़ते हुए उसी जलसे बटुककी अंजलि भरे—

ॐ आपो हि ष्ठा मयोभुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे॥ १॥
यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः॥ २॥
तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः॥ ३॥

सूर्यदर्शन—इसके बाद आचार्य बटुकको सूर्यदर्शनके लिये कहे—**सूर्यमुदीक्षस्व।**

बटुक खड़ा होकर आचार्यद्वारा प्रदत्त अंजलिस्थ जलसे सूर्यको अर्घ्य प्रदान करे। तत्पश्चात् दोनों हाथ उठाकर निम्न मन्त्रोंसे सूर्योपस्थान करे—

ॐ तच्चक्षुर्देवहितं पुरस्ताच्छुक्रमुच्चरत्। पश्येम शरदः शतं जीवेम शरदः शतᳪं शृणुयाम शरदः शतं प्र ब्रवाम शरदः शतमदीनाः स्याम शरदः शतं भूयश्च शरदः शतात्॥

हृदयालम्भन—आचार्य बटुकके दाहिने कन्धेपरसे अपना दाहिना हाथ ले जाकर बटुकके हृदयका स्पर्श करे और निम्न मन्त्र कहे— **ॐ मम व्रते ते हृदयं दधामि। मम चित्तमनुचित्तं ते ऽ अस्तु॥**
मम वाचमेकमना जुषस्व। बृहस्पतिष्ट्वा नियुनक्तु मह्यम्॥

बटुकपरिचय—इसके बाद आचार्य बालकके दाहिने हाथके अँगूठेको पकड़कर पूछे—

को नामासि?—तुम्हारा क्या नाम है?

कुमार बोले—**''''शर्मा/वर्मा/गुप्तोऽहं भो३।** (शर्मा/वर्मा/ गुप्त आदि विशेषणके साथ अपना नाम बताये।)

आचार्य पुनः पूछे—**कस्य ब्रह्मचार्यसि?** (तुम किसके ब्रह्मचारी हो?)

कुमार कहे—**भवतः।** (आपका)

आचार्य कहे—**ॐ इन्द्रस्य ब्रह्मचार्यसि, अग्निराचार्यस्तवाहमाचार्यः ''''शर्मन्/वर्मन्/गुप्त।**

इसके बाद आचार्य बटुकको पंचभूतोंके लिये प्रदान करे। बटुक उन-उन दिशाओंको हाथ जोड़कर प्रणाम करे। उसका क्रम है—

ॐ प्रजापतये त्वा परिददामि इति प्राच्याम्।

ॐ देवाय त्वा सवित्रे परिददामि इति दक्षिणस्याम्।

ॐ अद्भ्यस्त्वौषधीभ्यः परिददामि इति प्रतीच्याम्।

ॐ द्यावापृथिवीभ्यां त्वा परिददामि इत्युदीच्याम्।

ॐ विश्वेभ्यस्त्वा देवेभ्यः परिददामि इत्यधः।

ॐ सर्वेभ्यस्त्वा भूतेभ्यः परिददामि इत्यूर्ध्वम्।

अग्निप्रदक्षिणा—इसके बाद अग्निकी प्रदक्षिणा करके बटुक आचार्यके दाहिनी ओर बैठे।

ब्रह्माका वरण—इसके बाद आचार्य वरण-सामग्री लेकर[1] ब्रह्माके वरणका संकल्प करे—

ॐ अद्य करिष्यमाणोपनयनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं ....गोत्रम् ....शर्माणं ब्राह्मणमेभिः वरणद्रव्यैः ब्रह्मत्वेन भवन्तमहं वृणे। वरण-सामग्री ब्रह्माको प्रदान करे।

ब्रह्मा कहे—**ॐ वृतोऽस्मि।**

ब्रह्माकी प्रार्थना—इसके बाद आचार्य निम्न मन्त्रसे ब्रह्माकी प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः।
तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

ब्रह्माको अग्निकी परिक्रमा कराकर अग्निके दक्षिणमें[2] आसनपर बैठा दे।

---

१. प्रत्यक्ष ब्रह्माके अभावमें पचास कुशासे ब्रह्मा बनाना चाहिये। जैसा कि कहा है—

पञ्चाशत्कुशैः ब्रह्मा तदर्धेन तु विष्टरः। दक्षिणावर्तको ब्रह्मा वामावर्तस्तु विष्टरः॥
ऊर्ध्वकेशो भवेद् ब्रह्मा लम्बकेशस्तु विष्टरः॥

इस वचनके अनुसार पचास कुशाका ब्रह्मा बनाकर ब्रह्माके स्थानपर स्थापित करे।

२. उत्तरे सर्वपात्राणि उत्तरे सर्वदेवताः। उत्तरेऽपां प्रणयनं किमर्थं ब्रह्म दक्षिणे॥
यमो वैवस्वतो राजा वसते दक्षिणां दिशि। तस्य संरक्षणार्थाय ब्रह्मा तिष्ठति दक्षिणे॥

कुशकण्डिका एवं हवनविधान

प्रणीतापात्रस्थापन—प्रणीतापात्रको आगे रखकर जलसे भर दे और उसको कुशोंसे ढककर तथा ब्रह्माका मुख देखकर अग्निके उत्तरकी तरफ कुशोंके ऊपर रखे।

अग्नि (वेदी)-के चारों ओर कुश-आच्छादन (कुश-परिस्तरण)—

इक्यासी कुशोंको ले।* उनके बीस-बीसके चार भाग करे। इन्हीं चार भागोंको अग्निके चारों ओर फैलाया जाता है। इसमें ध्यान देनेकी बात यह है कि कुशसे हाथ खाली नहीं रहना चाहिये। प्रत्येक भाग फैलानेपर हाथमें एक कुश बचा रहेगा। इसलिये प्रथम बारमें इक्कीस कुश लिये जाते हैं। वेदीके चारों ओर कुश बिछानेका क्रम इस प्रकार है—कुशोंका प्रथम भाग (२०+१) लेकर पहले वेदीके अग्निकोणसे प्रारम्भकर ईशानकोणतक उन्हें उत्तराग्र बिछाये। फिर दूसरे भागको ब्रह्मासनसे अग्निकोणतक पूर्वाग्र बिछाये। तदनन्तर तीसरे भागको नैर्ऋत्यकोणसे वायव्यकोणतक उत्तराग्र बिछाये और चौथे भागको वायव्यकोणसे ईशानकोणतक पूर्वाग्र बिछाये। पुनः दाहिने खाली हाथसे वेदीके ईशानकोणसे प्रारम्भकर वामावर्त ईशानपर्यन्त प्रदक्षिणा करे।

पात्रासादन—हवनकार्यमें प्रयोक्तव्य सभी वस्तुओं तथा पात्रों यथा—समूल तीन कुश उत्तराग्र (पवित्रक बनानेवाली पत्तियोंको काटनेके लिये), साग्र दो कुशपत्र (बीचवाली सींक निकालकर पवित्रक बनानेके लिये), प्रोक्षणीपात्र (अभावमें दोना या

---

* इतने कुश न मिलें तो तेरह कुशोंको ग्रहण करना चाहिये। उनके तीन-तीनके चार भाग करे। कुशोंके सर्वथा अभावमें दूर्वासे भी क्रिया सम्पन्न की जा सकती है।

मिट्टीका कसोरा), आज्यस्थाली (घी रखनेका पात्र), पाँच सम्मार्जन कुश, सात उपयमन कुश, तीन समिधाएँ (प्रादेशमात्र लम्बी), स्रुवा, आज्य (घृत), यज्ञीय काष्ठ (पलाश आदिकी लकड़ी), २५६ मुट्ठी चावलोंसे भरा पूर्णपात्र*, चावलसे भरा कांस्यपात्र, सुवर्णशलाका, शुष्क गोमयखण्ड, भिक्षापात्र आदिको पश्चिमसे पूर्वतक उत्तराग्र अथवा अग्निके उत्तरकी ओर पूर्वाग्र रख ले।

पवित्रकनिर्माण—दो कुशोंके पत्रोंको बायें हाथमें पूर्वाग्र रखकर इनके ऊपर उत्तराग्र तीन कुशोंको दायें हाथसे प्रादेशमात्र दूरी छोड़कर मूलकी तरफ रख दे। तदनन्तर दो कुशोंके मूलको पकड़कर कुशत्रयको बीचमें लेते हुए दो कुशपत्रोंको प्रदक्षिणक्रमसे लपेट ले, फिर दायें हाथसे तीन कुशोंको मोड़कर बायें हाथसे पकड़ ले तथा दाहिने हाथसे कुशपत्रद्वय पकड़कर जोरसे खींच ले। जब दो पत्तोंवाला कुश कट जाय, तब उसके अग्रभागवाला प्रादेशमात्र दाहिनी ओरसे घुमाकर गाँठ दे दे ताकि दो पत्र अलग-अलग न हों। इस तरह पवित्रक बन गया। शेष सबको (दो पत्रोंके कटे भाग तथा काटनेवाले तीनों कुशोंको) उत्तर दिशामें फेंक दे।

पवित्रकके कार्य तथा प्रोक्षणीपात्रका संस्कार—पूर्वस्थापित प्रोक्षणीको अपने सामने पूर्वाग्र रखे। प्रणीतामें रखे जलका आधा भाग आचमनी आदि किसी पात्रद्वारा प्रोक्षणीपात्रमें तीन बार डाले। अब पवित्रीके अग्रभागको बायें हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठसे और मूलभागको दाहिने हाथकी अनामिका तथा अंगुष्ठसे पकड़कर इसके मध्यभागके

* आठ मुट्ठी अन्नको 'किंचित्' कहते हैं, आठ किंचित्का एक 'पुष्कल' (६४ मुट्ठी) होता है और चार पुष्कल (६४×४=२५६)-का एक पूर्णपात्र होता है। इस प्रकार पूर्णपात्रका परिमाण २५६ मुट्ठी होता है। 'अष्टमुष्टिर्भवेत्किञ्चित्किञ्चिदष्टौ तु पुष्कलम्। पुष्कलानि च चत्वारि पूर्णपात्रं विधीयते॥' (रेणुकारिका)

द्वारा प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले (**उत्प्लवन**)। पवित्रकको प्रोक्षणीपात्रमें पूर्वाग्र रख दे। प्रोक्षणीपात्रको बायें हाथमें रख ले। पुनः पवित्रकके द्वारा प्रणीताके जलसे प्रोक्षणीको प्रोक्षित करे। तदनन्तर इसी प्रोक्षणीके जलसे आज्यस्थाली, स्रुवा आदि सभी सामग्रियों तथा पदार्थोंका प्रोक्षण करे अर्थात् उनपर जलके छींटे डाले (**अर्थवत्प्रोक्ष्य**)। इसके बाद उस प्रोक्षणीपात्रको प्रणीतापात्र तथा अग्निके मध्यस्थान (असंचरदेश)-में पूर्वाग्र रख दे।

घृतको पात्र (आज्यस्थाली)-में निकालना—आज्यपात्रसे घीको कटोरेमें निकालकर उस पात्रको वेदीके दक्षिणभागमें अग्निपर रख दे। घीके गरम हो जानेपर एक जलती हुई लकड़ीको लेकर घृतपात्रके ईशानभागसे प्रारम्भकर ईशानभागतक दाहिनी ओर घुमाकर अग्निमें डाल दे। फिर खाली बायें हाथको बायीं ओरसे घुमाकर ईशानभागतक ले आये। यह क्रिया पर्यग्निकरण कहलाती है।

स्रुवाका सम्मार्जन—दायें हाथमें स्रुवाको पूर्वाग्र तथा अधोमुख लेकर आगपर तपाये। पुनः स्रुवाको बायें हाथमें पूर्वाग्र ऊर्ध्वमुख रखकर दायें हाथसे सम्मार्जन कुशके अग्रभागसे स्रुवाके अग्रभागका, कुशके मध्यभागसे स्रुवाके मध्यभागका और कुशके मूलभागसे स्रुवाके मूलभागका स्पर्श करे अर्थात् स्रुवाका सम्मार्जन करे। प्रणीताके जलसे स्रुवाका प्रोक्षण करे। उसके बाद सम्मार्जन कुशोंको अग्निमें डाल दे।

स्रुवाका पुनः प्रतपन—अधोमुख स्रुवाको पुनः अग्निमें तपाकर अपने दाहिनी ओर किसी पात्र, पत्ते या कुशोंपर पूर्वाग्र रख दे।

घृतपात्रका स्थापन—घीके पात्रको अग्निसे उतारकर अग्नि (वेदी)-के पश्चिमभागमें उत्तरकी ओर रख दे।

घृतका उत्प्लवन—घृतपात्रको सामने रख ले। प्रोक्षणीमें रखी हुई पवित्रीको लेकर उसके मूलभागको दाहिने हाथके अंगुष्ठ तथा अनामिकासे और बायें हाथके अंगुष्ठ तथा अनामिकासे पवित्रीके अग्रभागको पकड़कर कटोरेके घृतको तीन बार ऊपर उछाले। घृतका अवलोकन करे और यदि घृतमें कोई विजातीय वस्तु हो तो निकालकर फेंक दे। तदनन्तर प्रोक्षणीके जलको तीन बार उछाले और पवित्रीको पुनः प्रोक्षणीपात्रमें रख दे।

तीन समिधाओंकी आहुति—ब्रह्माका स्पर्श करते हुए बायें हाथमें उपयमन (सात)-कुशोंको लेकर हृदयमें बायाँ हाथ सटाकर तीन समिधाओंको घीमें डुबोकर मनसे प्रजापतिदेवताका ध्यान करते हुए खड़े होकर मौन हो अग्निमें डाल दे। तदनन्तर बैठ जाय।

पर्युक्षण (जलधारा देना)—पवित्रकसहित प्रोक्षणीपात्रके जलको दक्षिण हाथके चुलुक (चुल्लू)-में लेकर अग्निके ईशानकोणसे ईशानकोणतक प्रदक्षिणक्रमसे जलधारा गिरा दे। पवित्रकको बायें हाथमें लेकर फिर दाहिने खाली हाथको उलटे अर्थात् ईशानकोणसे उत्तर होते हुए ईशानकोणतक ले आये (**इतरथावृत्तिः**) और पवित्रकको दायें हाथमें लेकर प्रणीतामें पूर्वाग्र रख दे।

अग्निप्रतिष्ठा—पूर्वमें वेदीमें स्थापित अग्निकी निम्न मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए प्रतिष्ठा करे—

'ॐ समुद्भवनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव'

तदनन्तर अग्निका ध्यान करे—

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्।
सुवर्णवर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम्। सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः॥
विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु।

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य। त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ आविवेश॥

ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भवनाम्ने अग्नये नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। कहकर अग्निका पूजन कर ले। काष्ठ छोड़कर तथा वेणुधमनीसे अथवा हाथके माध्यमसे फूँककर अग्निको प्रज्वलित करे।* तदनन्तर हवन करे।

हवन-विधि

सर्वप्रथम प्रजापतिदेवताके निमित्त आहुति दी जाती है। तदनन्तर इन्द्र, अग्नि तथा सोमदेवताको आहुति देनेका विधान है। इन चार आहुतियोंमें प्रथम दो आहुतियाँ '**आघार**' नामवाली हैं एवं तीसरी और चौथी आहुति '**आज्यभाग**' नामसे कही जाती है। ये चारों आहुतियाँ घीसे देनी चाहिये। इन आहुतियोंको प्रदान करते समय ब्रह्मा कुशके द्वारा हवनकर्ताके दाहिने हाथका स्पर्श किये रहे, इस क्रियाको '**ब्रह्मणान्वारब्ध**' कहते हैं।

---

* **धमनीमन्तरा कृत्वा तृणं वा काष्ठमेव वा। मुखेनोपधमेदग्निं मुखादग्निरजायत॥** अग्नेर्वेणुस्पर्शस्तु न कार्यः। न वेणुनाग्निं संस्पृशेत्—इति निषेधात्।

दाहिना घुटना पृथ्वीपर लगाकर स्रुवामें घी लेकर, प्रजापतिदेवताका ध्यानकर निम्न मन्त्रका मनसे उच्चारणकर प्रज्वलित अग्निमें आहुति दे।

(१) **ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।** कहकर वेदीके मध्यभागमें आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़े।)

आगेकी तीन आहुतियाँ इस प्रकार बोलकर दे—

(२) **ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।** कहकर वेदीके मध्यभागमें आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़े।)

(३) **ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।** कहकर वेदीके उत्तरपूर्वार्धभागमें आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़े।)

(४) **ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।** कहकर वेदीके दक्षिणपूर्वार्धभागमें आहुति दे। (स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़े।)

नवाहुति

१-ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

२-ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

३-ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

४-ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

५-ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा॥ इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम॥

६-ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमया असि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ स्वाहा॥ इदमग्नये ऽयसे न मम॥

७-ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम॥

८-ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम॥

तदनन्तर प्रजापति देवताका ध्यानकर मनमें निम्न मन्त्रका उच्चारणकर मौन होकर आहुति दे—

९-ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

स्विष्टकृत् आहुति—इसके बाद ब्रह्माद्वारा कुशसे स्पर्श किये जानेकी अवस्थामें निम्न मन्त्रसे घृतद्वारा स्विष्टकृत् आहुति दे—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

संस्रवप्राशन—हवन पूर्ण होनेपर प्रोक्षणीपात्रसे घृत दाहिने हाथमें लेकर यत्किंचित् पान करे। हाथ धो ले। फिर आचमन करे।

मार्जनविधि—निम्नलिखित मन्त्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे कुशोंके द्वारा अपने सिरपर मार्जन करे—

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।

इसके बाद निम्न मन्त्रसे जल नीचे छोड़े—

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

पवित्रप्रतिपत्ति—पवित्रकको अग्निमें छोड़ दे।

पूर्णपात्रदान—पूर्वमें स्थापित पूर्णपात्रमें द्रव्य-दक्षिणा रखकर निम्न संकल्पकर दक्षिणासहित पूर्णपात्र ब्रह्माको प्रदान करे—

ॐ अद्य उपनयनाङ्गहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं पूर्णपात्रं सदक्षिणाकं प्रजापतिदैवतं

····गोत्राय ····शर्मणे ब्रह्मणे भवते सम्प्रददे।

ब्रह्मा '**स्वस्ति**' कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर ले।

प्रणीताविमोक—प्रणीतापात्रको ईशानकोणमें उलटकर रख दे।

मार्जन—उपयमन कुशोंद्वारा निम्न मन्त्रसे उलटकर रखे गये प्रणीताके जलसे मार्जन करे—

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उन कुशोंको अग्निमें छोड़ दे तथा ब्रह्मग्रन्थिको खोल दे।

कुमारका अनुशासन—इसके बाद आचार्य कुमारको उपदेश प्रदान करे—

आचार्य कुमारसे कहे—**ब्रह्मचार्यसि**। (हे बालक! तुम मेरे ब्रह्मचारी हो)।

बटुक कहे—**असानि**। (गुरुदेव! मैं आपका ब्रह्मचारी हूँ)।

आचार्य कहे—**अपोऽशान**। (तुम सर्वदा अपोशान-विधिसे ही अन्न-भक्षण करना)।

बटुक कहे—**अश्नानि**। (गुरुदेव! मैं अपोशानविधिसे ही अन्न ग्रहण करूँगा अर्थात् आचमन करके ही भोजन करूँगा)।

आचार्य कहे—**कर्म कुरु**। (ब्रह्मचारीके कर्म करो)।

बटुक कहे—**करवाणि**। (गुरुदेव! मैं पालन करूँगा)।

आचार्य कहे—**मा दिवा सुषुप्थाः**। (तुम दिनमें शयन मत करना)।

बटुक कहे—**न स्वपानि**। (गुरुदेव! मैं दिनमें शयन नहीं करूँगा)।

आचार्य कहे—**वाचं यच्छ**। (तुम वाणीपर संयम रखना)।

बटुक कहे—**यच्छानि**। (गुरुदेव! मैं अपनी वाणीपर संयम रखूँगा)।

आचार्य कहे—**समिधमाधेहि**। (तुम समिधा लाओ)।

बटुक कहे—**आदधानि**। (गुरुदेव! मैं समिधाधान करूँगा)।

पुनः आचार्य कहे—**अपोऽशान**। (तुम सर्वदा अपोशानविधिसे ही अन्न-भक्षण करना)।

बटुक कहे—**अश्नानि**। (गुरुदेव! मैं अपोशानविधिसे ही अन्न ग्रहण करूँगा)।

लग्नदान—इसके बाद बटुक गायत्री-मन्त्रग्रहणमें अधिकारप्राप्तिके लिये तथा लग्नदोषकी शान्तिके लिये दानका निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य अस्य कुमारस्य सावित्रीग्रहणलग्नात् ''''स्थानस्थितैः दुष्टग्रहैः सूचितदुष्टफलनिवृत्तिपूर्वकशुभफलप्राप्तये आदित्यादिनवग्रहाणां प्रीतये च इदं सुवर्णनिष्क्रयीभूतं द्रव्यं आचार्याय सम्प्रददे। कहकर दैवज्ञ ब्राह्मणको दक्षिणा प्रदान करे।

देवपूजन

आचार्य एक काँसेकी थालीमें चावल बिछाकर ओंकार, व्याहृतिपूर्वक गायत्रीके अक्षरसहित गणेश और कुलदेवताको सुवर्णकी शलाका अथवा कुशासे लिखकर बटुकद्वारा निम्न संकल्पपूर्वक उनका पूजन कराये।

ॐ अद्य ......गोत्रः ......शर्मा मम ब्रह्मवर्चससिद्ध्यर्थं वेदाध्ययनाधिकारसिद्ध्यर्थं गायत्र्युपदेशाङ्गविहितं गायत्रीसावित्रीसरस्वतीपूजनपूर्वकमाचार्यपूजनं गणपतिपूजनञ्च करिष्ये। सर्वप्रथम निम्न मन्त्र पढ़ते हुए गणपतिका पूजन करे—

गणपतिपूजन—ॐ गणानां त्वा गणपतिꣳ हवामहे प्रियाणां त्वा प्रियपतिꣳ हवामहे निधीनां त्वा निधिपतिꣳ हवामहे वसो मम। आहमजानि गर्भधमा त्वमजासि गर्भधम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः सिद्धिबुद्धिसहिताय गणपतये नमः गणपतिमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अक्षत, पुष्प, चन्दन चढ़ाये।

गायत्रीपूजन—निम्न मन्त्रसे गायत्रीका पूजन करे—

ॐ ताꣳ सवितुर्वरेण्यस्य चित्रामाऽहं वृणे सुमतिं विश्वजन्याम्। यामस्य कण्वो अदुहत्प्रपीनाꣳ सहस्रधारां पयसा महीङ्गाम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गायत्र्यै नमः गायत्रीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि

समर्पयामि। अक्षत, पुष्प, चन्दन आदि चढ़ाये।

सावित्रीपूजन—निम्न मन्त्रसे सावित्रीका पूजन करे—

ॐ सवित्रा प्रसवित्रा सरस्वत्या वाचा त्वष्ट्रा रूपैः पूष्णा पशुभिरिन्द्रेणास्मे बृहस्पतिना ब्रह्मणा वरुणेनौजसाऽग्निना तेजसा सोमेन राज्ञा विष्णुना दशम्या देवतया प्रसूतः प्र सर्पामि।

ॐ भूर्भुवः स्वः सावित्र्यै नमः सावित्रीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अक्षत, पुष्प, चन्दन चढ़ाये।

सरस्वतीपूजन—ॐ पावका नः सरस्वती वाजेभिर्वाजिनीवती। यज्ञं वष्टु धियावसुः।

ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वत्यै नमः सरस्वतीमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अक्षत, पुष्प, चन्दन चढ़ाये।

गुरुपूजन—ॐ बृहस्पते अति यदर्यो अर्हाद् द्युमद्विभाति क्रतुमज्जनेषु। यद्दीदयच्छवस ऋतप्रजात तदस्मासु द्रविणं धेहि चित्रम्॥

ॐ भूर्भुवः स्वः गुरवे नमः, गुरुमावाहयामि, स्थापयामि, पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। अक्षत, पुष्प, चन्दन चढ़ाये।

गायत्रीमन्त्रोपदेश[1]

इसके बाद अग्निकुण्डके समीप उत्तर-पश्चिमाभिमुख बैठा हुआ बटुक आचार्यके दोनों पैर[2] स्पर्श करे। आचार्य बटुकके अभिमुख होकर एकान्तमें गायत्रीमन्त्रका उपदेश दे। गुरु बटुकको वस्त्रसे आच्छादितकर[3] निम्न क्रमसे गायत्रीका उपदेश करे—

गायत्री-उपदेशहेतु विनियोग—आचार्य हाथमें जल लेकर विनियोग मन्त्र पढ़े—

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, दैवी गायत्री छन्दः, परमात्मा देवता, व्याहृतीनां प्रजापतिर्ऋषिः गायत्र्युष्णिगनुष्टुप्छन्दांसि अग्निवायुसूर्या देवताः तत्सवितुरिति विश्वामित्रऋषिर्गायत्री छन्दः सविता देवता सर्वेषां माणवकोपदेशने विनियोगः। जल भूमिपर छोड़ दे।

गायत्री-उपदेश—बटुकको उपदेश देते समय आचार्य पहले गायत्रीका प्रथम पाद, बादमें आधी ऋचा और उसके बाद व्याहृतिसहित सम्पूर्ण मन्त्रका उपदेश दे। इस प्रकार दाहिने कानमें तीन बार गायत्रीमन्त्रोपदेश देना चाहिये। यथा—

---

१. सर्वत्र तु वरेण्यं स्यात् जपकाले वरेणियम्।
गायत्रीमन्त्रके जपके समय **वरेण्यं**की जगह **वरेणियम्** उच्चारण करना चाहिये। अतः मन्त्रोपदेशमें **वरेण्यं**के साथ **वरेणियम्**का भी उपदेश करना चाहिये।

२. ब्रह्मारम्भेऽवसाने च पादौ ग्राह्यौ गुरोः सदा।
व्यत्यस्तपाणिना कार्यमुपसङ्ग्रहणं गुरोः। सव्येन सव्यः स्प्रष्टव्यो दक्षिणेन तु दक्षिणः॥ (मनु० २।७१-७२)

३. उपदेशं तु गायत्र्या वाससाऽऽच्छादयेद् बटुम्॥

प्रथम बार—प्रथम पाद—**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यम्।**

द्वितीय पाद—**भर्गो देवस्य धीमहि।**

तृतीय पाद—**धियो यो नः प्रचोदयात्॥**

आचार्य बटुकसे इनका उच्चारण भी करवाये।

द्वितीय बार—प्रथम आधी ऋचा—**ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि।**

द्वितीय आधी ऋचा—**धियो यो नः प्रचोदयात्।**

आचार्य बटुकसे इनका उच्चारण भी करवाये।

तृतीय बार—तृतीय बार त्रिपदा गायत्रीका उपदेश एक साथ दे।

ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि। धियो यो नः प्रचोदयात्।

इस प्रकार तीसरी बार सम्पूर्ण गायत्री सुनाकर यथाशक्ति बटुकसे उच्चारण कराये।

परिसमूहन—इसके बाद ब्रह्मचारी अग्निकुण्डके पश्चिमकी ओर बैठकर घीमें डूबी हुई सूखी पाँच समिधाएँ अथवा पाँच शुष्क गोमयपिण्ड लेकर निम्न मन्त्रोंका उच्चारण करता हुआ हवन करे—

१-**ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु।**

२-**ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि।**

३-ॐ एवं माᳬ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।

४-ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा असि।

५-ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्।

अग्निपर्युक्षण तथा समिदाधान—इसके बाद प्रदक्षिणक्रमसे ईशानसे उत्तरतक जलसे अग्निका प्रोक्षणकर एक समिधाको घीमें डुबोकर खड़े होकर निम्न मन्त्रको पढ़कर अग्निमें एक आहुति प्रदान करे—

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे। यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस एवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्व्यन्नादो भूयासᳬस्वाहा।

इसी मन्त्रसे घृताक्त समिधाके द्वारा दो आहुतियाँ और प्रदान करे।

तदनन्तर पूर्वरीतिसे **अग्ने सुश्रवः** आदि पाँच मन्त्रोंद्वारा सूखी समिधाओं अथवा शुष्क गोमयपिण्डसे पाँच आहुतियाँ दे।

पुनः पूर्ववत् जलसे अग्निका प्रोक्षण करे तथा अग्निमें हाथ सेंककर निम्न मन्त्रोंसे मुखपर हाथ फेरे—

ॐ तनूपा ऽ अग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।

ॐ आयुर्दा अग्नेऽस्यायुर्मे देहि।

ॐ वर्चोदा अग्नेऽसि वर्चो मे देहि।

ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म आपृण।

ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।

ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।

ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ।

सर्वांगस्पर्श—इसके बाद निम्न मन्त्रसे ब्रह्मचारी अपने सम्पूर्ण शरीरपर हाथ फेरे—

ॐ अङ्गानि च म आप्यायन्ताम्।

इसके बाद निम्न मन्त्रोंसे यथानिर्दिष्ट अंगोंका स्पर्श करे—

ॐ वाक् च म आप्यायताम्—मुखका स्पर्श करे।

ॐ प्राणश्च म आप्यायताम्—दोनों नासिकारन्ध्रोंका स्पर्श करे।

ॐ चक्षुश्च म आप्यायताम्—दोनों नेत्रोंका स्पर्श करे।

ॐ श्रोत्रञ्च म आप्यायताम्—क्रमसे दाहिने और बायें कानका स्पर्श करे।

ॐ यशो बलं च म आप्यायताम्—दोनों भुजाओंका दाहिनेसे बायेंका और बायेंसे दाहिनेका परस्पर एक साथ स्पर्श करे। तदनन्तर जलका स्पर्श कर ले।

त्र्यायुष्करण—तत्पश्चात् आचार्य स्रुवासे भस्म लेकर दायें हाथकी अनामिकाके अग्रभागसे निम्न मन्त्रोंसे

बटुकके निर्दिष्ट अंगोंमें भस्म लगाये—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटमें।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—कण्ठमें।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिण बाहुमूलपर।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदयमें।

अग्नि तथा आचार्यका अभिवादन—तदनन्तर ब्रह्मचारी गोत्र-प्रवरपूर्वक अपना नामोच्चारण करता हुआ अग्नि तथा गुरु आदिको निम्न रीतिसे प्रणाम करे।

अग्ने त्वामभिवादये ....गोत्रः ....प्रवरान्वितः ....शर्माहं भोः३ कहकर अग्निको प्रणाम करे।

बटुक अपने दाहिने हाथसे गुरुके दाहिने चरणका और बायें हाथसे बायें चरणका स्पर्श करते हुए बोले—**त्वामभिवादये ....गोत्रः ....प्रवरान्वितः ....शर्माहं भोः३** कहकर आचार्यको प्रणाम करे।

आशीर्वाद—आचार्य निम्न वाक्य कहकर आशीर्वाद दे—**आयुष्मान् भव सौम्य श्रीशर्मन्/वर्मन्/गुप्त।**

बटुक अन्य श्रेष्ठजनोंका भी वन्दन करे।

भिक्षाग्रहण—तदनन्तर ब्रह्मचारी भिक्षापात्र लेकर दण्ड धारणकर सर्वप्रथम माताके पास जाय और निम्न वाक्यका उच्चारणकर भिक्षा माँगे—

ब्राह्मण ब्रह्मचारी कहे—**भवति भिक्षां देहि मातः।**

क्षत्रिय ब्रह्मचारी कहे—**भिक्षां भवति देहि मातः।**

वैश्य ब्रह्मचारी कहे—**देहि भिक्षां भवति मातः।**

भिक्षा ग्रहण करनेके बाद ब्रह्मचारी कहे—**स्वस्ति।**

इसके बाद पुनः '**भवन् भिक्षां देहि**' कहकर अन्य लोगोंसे भिक्षा माँगे। प्राप्त भिक्षाको यह कहते हुए गुरुको दे—

भो गुरो इयं भिक्षा मया लब्धा।

आचार्यकी '**भुङ्क्ष्व**' अनुमति पाकर ब्रह्मचारी भिक्षाको स्वीकार करे।

अग्निपूजन—इसके बाद गन्धाक्षतपुष्प छोड़ते हुए समुद्भवनामक अग्निका पूजन करे—

ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भवनामाग्नये नमः समुद्भवनामाग्निं पूजयामि, सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि।

अग्निका विसर्जन—निम्नलिखित मन्त्रसे अग्निपर अक्षत छोड़ते हुए विसर्जन करे—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

ब्रह्मचारीके लिये नियमोपदेश—इसके बाद आचार्य ब्रह्मचारीके लिये नियमोंका उपदेश करे—

अधःशायी स्यात्—ब्रह्मचारीको जमीनपर सोना चाहिये।

अक्षारालवणाशी स्यात्—क्षार, लवणरहित भोजन करना चाहिये।

समावर्तनपर्यन्तं दण्डधारणम्—समावर्तनसंस्कारतक दण्ड धारण करना चाहिये।

अग्निपरिचरणम्—अग्निकी उपासना करनी चाहिये।

प्रत्यहं समिदाहरणम्—प्रतिदिन समिधा लानी चाहिये।

गुरुशुश्रूषणम्—गुरुकी सेवा करनी चाहिये।

भिक्षाचर्यां कुर्यात्—भिक्षावृत्तिसे रहना चाहिये।

मधु, मांसम्, मज्जनम्, उपर्यासनम्, स्त्रीगमनम्, अनृतवदनम्, अदत्तादानम् एतानि वर्जयेत्—मधु, मांस, शरीर मलकर स्नान, उच्चासन, स्त्रीगमन, असत्यभाषण, दूसरेके द्वारा बिना दिये कुछ ग्रहण करना आदिका वर्जन करना चाहिये।

ताम्बूलम्, अभ्यङ्गम्, अञ्जनम्, आदर्शम्, छत्रोपानहौ, कांस्यपात्रभोजनादीनि च वर्जयेत्—ताम्बूल, उबटन, काजल, दर्पण, छाता-जूता तथा कांस्यपात्रमें भोजन आदिका त्याग करे।

आचार्येणाहूत उत्थाय प्रतिशृणुयात्—आचार्यके बुलानेपर शीघ्र उठकर उनके वचन सुने।

शयानं चेत् आसीनः आसीनञ्चेत्तिष्ठन्, तिष्ठन्तं चेदभिक्रामन्, अभिक्रामन्तं चेद् अभिधावन् प्रतिवचनं दद्यात्—आचार्यके द्वारा बुलानेपर लेटे हुए शिष्यद्वारा बैठकर, बैठे हुए शिष्यद्वारा खड़े होकर, खड़े हुए शिष्यद्वारा चलते हुए, चलते हुए शिष्यद्वारा दौड़ते हुए उत्तर देना चाहिये।

स एवं वर्तमानः इहैव स्वर्गे वसति—इस प्रकारका आचरण करनेवाला ब्रह्मचारी यहाँ रहता हुआ भी मानो उत्तम लोकमें निवास करता है।

विष्णुस्मरण—इसके बाद हाथमें पुष्प-अक्षत लेकर विष्णुका स्मरण करते हुए समस्त कर्म उन्हें अर्पण करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ उपनयनसंस्कार-प्रयोग पूर्ण हुआ॥

वेदारम्भसंस्कार-प्रयोग

उपनयनके अनन्तर आचार्य वेदारम्भवेदीके समीप आकर बटुकको भी अपने दाहिने एक शुद्ध आसनपर बैठाये। तदनन्तर आचमन, प्राणायाम आदि करके गणेशादि देवोंका स्मरणात्मक पूजन कर ले। इसके बाद निम्न रीतिसे वेदीपर अग्निकी स्थापना करे।

अग्निस्थापन—आचार्य वेदारम्भ-संस्कारके लिये बनायी गयी पंच-भूसंस्कारसे सम्पन्न* वेदीपर समुद्भव नामक अग्निकी स्थापनाके लिये जल, अक्षत, पुष्प आदि लेकर संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रः ''''शर्माहमस्य माणवकस्य वेदारम्भसंस्कारकर्मणि समुद्भवनामाग्नेः स्थापनं करिष्ये। कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

इसके बाद सुवासिनीके द्वारा लायी गयी प्रदीप्त, निर्धूम समुद्भव नामक अग्निकी स्थापना वेदीपर निम्न मन्त्रसे करे—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।

इसके बाद अग्निके ऊपर उसकी रक्षाके लिये कुछ काष्ठ आदि डाल दे और अग्निको प्रज्वलित करे।

---

* वेदारम्भ-वेदीका संस्कार उपनयन-संस्कारके समय सम्पन्न हो गया है, अतः पुनः करनेकी आवश्यकता नहीं है।

ब्रह्मावरण *—इसके बाद वरणसामग्री लेकर ब्रह्माके वरणका संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....**शर्माऽहमस्मिन् वेदारम्भहवनकर्मणि कृताकृतावेक्षणादिब्रह्मकर्म कर्तुं** ....गोत्रं ....शर्माणं **ब्राह्मणमेभिर्वरणद्रव्यैर्ब्रह्मत्वेन त्वामहं वृणे।** वरणसामग्री ब्रह्माको प्रदान करे।

ब्रह्मा कहे—**वृतोऽस्मि।**

इसके बाद ब्रह्माकी प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर वेदीके दक्षिण भागमें आसनपर बैठा दे।

कुशकण्डिका—पृ०सं० ३९ में दी गयी विधिके अनुसार कुशकण्डिका करे।

अग्निप्रतिष्ठा—निम्न वाक्य बोलकर अक्षत छोड़ते हुए पूर्वमें वेदीपर स्थापित अग्निकी प्रतिष्ठा करे—

समुद्भवनामाग्ने सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

इस प्रकार प्रतिष्ठाकर अग्निका ध्यान करे—

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम्॥

---

* प्रायः परम्पराके अनुसार ब्रह्माके न होनेपर पचास कुशोंमें ग्रन्थि लगाकर कुशब्रह्मा बना लिया जाता है। इस स्थितिमें ब्रह्मावरणकी प्रक्रिया आचार्यद्वारा की जानी चाहिये।

सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः । विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ आ विवेश॥

ॐ भूर्भुवः स्वः समुद्भवनाम्ने अग्नये नमः सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि—कहकर अग्निका पूजन कर ले।

हवनविधि—उक्त मन्त्रोंसे अग्निकी प्रतिष्ठा और पूजा करनेके अनन्तर आचमन करके दक्षिण जानुको भूमिपर टेककर, मौन रहकर मूल और मध्य भागके मध्यसे स्रुवाको पकड़कर घृतसे हवन करे। हवनके समय ब्रह्मा कुशासे हवनकर्ताका स्पर्श किये रहे (**ब्रह्मणान्वारब्ध**)। इसके पूर्व द्रव्यत्यागके लिये हाथमें जल लेकर निम्न वाक्यसे छोड़ दे—**इदमाज्यं तत्तद्देवतायै मया परित्यक्तं यथादैवतमस्तु न मम।**

तदनन्तर निम्न मन्त्रोंसे घृतकी आहुति प्रदान करे। स्रुवामें बचे घीको प्रोक्षणीपात्रमें छोड़ता जाय।

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

(२) ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।

(३) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(४) ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

इसके बाद ब्रह्मा हवनकर्तासे कुशोंका स्पर्श हटा ले (**अनन्वारब्ध**), तत्पश्चात् हवन करे।

पहले यजुर्वेदके मन्त्रोंसे आहुति प्रदान करे—

यजुर्वेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा, इदमन्तरिक्षाय न मम।

(२) ॐ वायवे स्वाहा, इदं वायवे न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

इसके बाद ऋग्वेदके मन्त्रोंसे आहुति प्रदान करे—

ऋग्वेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ पृथिव्यै स्वाहा, इदं पृथिव्यै न मम।

(२) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

इसके बाद सामवेदके मन्त्रोंसे आहुति प्रदान करे—

सामवेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ दिवे स्वाहा, इदं दिवे न मम।

(२) ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

इसके बाद अथर्ववेदके मन्त्रोंसे आहुति प्रदान करे—

अथर्ववेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ दिग्भ्यः स्वाहा, इदं दिग्भ्यो न मम।

(२) ॐ चन्द्रमसे स्वाहा, इदं चन्द्रमसे न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

सामान्य आहुतियाँ—

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

(२) ॐ देवेभ्यः स्वाहा, इदं देवेभ्यो न मम।

(३) ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा, इदमृषिभ्यो न मम।

(४) ॐ श्रद्धायै स्वाहा, इदं श्रद्धायै न मम।

(५) ॐ मेधायै स्वाहा, इदं मेधायै न मम।

(६) ॐ सदसस्पतये स्वाहा, इदं सदसस्पतये न मम।

(७) ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।

पुनः ब्रह्मा हवनकर्ताका कुशोंसे स्पर्श करे और निम्न मन्त्रोंसे आहुति प्रदान करे—

नवाहुति

१-ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

२-ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

३-ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

४-ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

५-ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

६-ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजः स्वाहा। इदमग्नये ऽयसे न मम।

७-ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्त्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

८-ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं वि मध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।

९-(मौन होकर) **ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।**

स्विष्टकृत् आहुति—इसके बाद ब्रह्माद्वारा कुशसे स्पर्श किये जानेकी स्थितिमें निम्न मन्त्रसे घृतद्वारा स्विष्टकृत् आहुति दे—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

संस्त्रवप्राशन—हवन पूर्ण होनेपर प्रोक्षणीपात्रसे घृत दाहिने हाथमें लेकर यत्किंचित् प्राशन करे। हाथ धो ले। फिर आचमन करे।

मार्जनविधि—इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे कुशोंके द्वारा अपने सिरपर मार्जन करे—

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।

इसके बाद निम्न मन्त्रसे जल नीचे छोड़े—

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

पवित्रप्रतिपत्ति—पवित्रकको अग्निमें छोड़ दे।

पूर्णपात्रदान—पूर्वमें स्थापित पूर्णपात्रमें द्रव्य-दक्षिणा रखकर निम्न संकल्पकर दक्षिणासहित पूर्णपात्र ब्रह्माको प्रदान करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्माहं अस्य कुमारस्य वेदारम्भसंस्कारहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं वृषनिष्क्रयद्रव्यसहितं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्रह्मणे भवते सम्प्रददे।

ब्रह्मा '**स्वस्ति**' कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर ले।

प्रणीताविमोक—प्रणीतापात्रको ईशानकोणमें उलटकर रख दे।

मार्जन—उपयमन कुशोंद्वारा निम्न मन्त्रसे उलटकर रखे गये प्रणीताके जलसे मार्जन करे—

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्।

उन कुशोंको अग्निमें छोड़ दे तथा ब्रह्मग्रन्थिको खोल दे।

देवपूजन*—इसके बाद ब्रह्मचारी देवपूजन करनेके लिये हाथमें जल, अक्षत, पुष्प, सुपारी लेकर संकल्प करे—

* आदौ गणपतिं चेष्ट्वा सम्पूज्य च सरस्वतीम्। गुरुपूजां ततः कृत्वा विद्याः सर्वाः समारभेत्॥
प्राशनादिविमोकान्ते कृत्वा विघ्नेशपूजनम्। सरस्वतीं हरिं लक्ष्मीं स्वविद्यां पूजयेत्ततः॥ (वीरमित्रोदय-संस्कारप्रकाश)

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्माहं **पूर्वोच्चारितग्रहगुणगणविशेषणविशिष्टायां पुण्यतिथौ मम ब्रह्मवर्चससिद्ध्यर्थं वेदारम्भकर्मणः पूर्वाङ्गत्वेन गणपतिसहितसरस्वतीविष्णुलक्ष्मीयजुर्वेदगुरूणां पूजनं करिष्ये।**

इसके बाद लकड़ीके पाटेपर दक्षिणसे उत्तरकी ओरसे पाँच स्थानोंपर दही-चावल मिलाकर (दध्यक्षतपुंज) रखे तथा उनपर सुपारी रखे और उनपर निम्न मन्त्रोंसे गणपति आदि देवताओंकी यथाक्रम स्थापना करे—

(१) **ॐ भूर्भुवः स्वः गणेश इहागच्छ पूजार्थं त्वामावाहयामि। इह तिष्ठ।**

(२) **ॐ भूर्भुवः स्वः विष्णो इहागच्छ पूजार्थं त्वामावाहयामि। इह तिष्ठ।**

(३) **ॐ भूर्भुवः स्वः सरस्वति इहागच्छ पूजार्थं त्वामावाहयामि। इह तिष्ठ।**

(४) **ॐ भूर्भुवः स्वः लक्ष्मि इहागच्छ पूजार्थं त्वामावाहयामि। इह तिष्ठ।**

(५) **ॐ भूर्भुवः स्वः स्वविद्ये इहागच्छ पूजार्थं त्वामावाहयामि। इह तिष्ठ।**

निम्न मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए देवोंकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ एतं ते देव सवितर्यज्ञं प्राहुर्बृहस्पतये ब्रह्मणे। तेन यज्ञमव तेन यज्ञपतिं तेन मामव॥

नाममन्त्रोंसे गन्धाक्षतपुष्पोंद्वारा सबका पूजन करे।

गुरुपूजन—बटुक गन्ध-पुष्पादिद्वारा गुरुका पूजन करे और उनके चरणोंमें प्रणाम करे।

वेदारम्भ

इसके बाद सर्वप्रथम प्रणवव्याहृतिपूर्वक गायत्री मन्त्रको पढ़कर अपने वेदकी शाखाका आरम्भ करे। यथा—

हरिः ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात्।

शुक्लयजुर्वेदका आरम्भ—

ॐ इषे त्वोर्जे त्वा वायव स्थ देवो वः सविता प्रार्पयतु श्रेष्ठतमाय कर्मण आप्यायध्व मघ्न्या इन्द्राय भागम्प्रजावतीरनमीवा अयक्ष्मा मा व स्तेन ईशत माघशꣳ सो ध्रुवा अस्मिन् गोपतौ स्यात बह्वीर्यजमानस्य पशून् पाहि॥

ऋग्वेदारम्भ—

ॐ अग्निमीळे पुरोहितं यज्ञस्य देवमृत्विजम्। होतारं रत्नधातमम्।

सामवेदारम्भ—

ॐ अग्न आ याहि वीतये गृणानो हव्यदातये। नि होता सत्सि बर्हिषि।

अथर्ववेदारम्भ—

ॐ शं नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये। शं योरभि स्रवन्तु नः।

पुनः गायत्रीमन्त्रका पाठ करे और '**विरामोऽस्तु**'—ऐसा गुरुके कहनेपर शिष्य उनके चरणोंमें प्रणाम करे और पाठ बन्द करे।

काशीप्रस्थान—आचारानुसार इस अवसरपर ब्रह्मचारीको वेद पढ़नेके लिये काशी भेजते हैं।

विद्यार्थीके नियम—आचार्यके द्वारा बुलानेपर लेटे हुए शिष्यद्वारा बैठकर, बैठे हुए शिष्यद्वारा खड़े होकर, खड़े हुए शिष्यद्वारा चलते हुए, चलते हुए शिष्यको दौड़ते हुए उत्तर देना चाहिये।

त्र्यायुष्करण—इसके बाद आचार्य बैठकर स्रुवाद्वारा भस्म ले और दाहिने हाथकी अनामिका अँगुलीसे निम्न मन्त्रोंका पाठ करता हुआ पहले स्वयं पुनः इसी रीतिसे शिष्यको भी लगाये—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटपर भस्म लगाये।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—कण्ठमें भस्म लगाये।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिण बाहुके मूलमें।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदयमें भस्म लगाये।

अग्निविसर्जन—इसके बाद अक्षत छोड़ते हुए समुद्भव नामक अग्निकी पूजाकर विसर्जन करे—

गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

विष्णुस्मरण—इसके बाद हाथमें पुष्प-अक्षत लेकर विष्णुका स्मरण करते हुए समस्त कर्म उन्हें अर्पण करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताऽध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥
यत्पादपङ्कजस्मरणात् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

॥ वेदारम्भसंस्कार-प्रयोग पूर्ण हुआ॥

समावर्तनसंस्कार-प्रयोग

पारस्करगृह्यसूत्रके '**एतदेव व्रतादेशनविसर्गेषु**'—इस वचनके अनुसार समावर्तन-संस्कारमें वेदारम्भ एवं उपनयन-संस्कारमें विहित अधिकांश विधियोंको सम्पादित किया जाता है। इसमें मातृपूजनादिसे लेकर पूर्णपात्रादिदानतकका कर्म आचार्यद्वारा सम्पन्न होता है, तदनन्तर अष्टकलशाभिषेकसे लेकर दण्डधारणतकके कार्य स्नातकद्वारा सम्पन्न होते हैं।[1]

सर्वप्रथम बटुक स्नान करनेके लिये वर[2] (दक्षिणा)-रूपसे आचार्यको गौ आदि प्रदान करे। एतदर्थ गोदान-संकल्प करे।

गोदान-संकल्प—ॐ अद्य ....अहं स्नानाधिकारसिद्ध्यै इमां गां गोप्रत्याम्नायनिष्क्रयभूतां दक्षिणां आचार्याय भवते सम्प्रददे। कहकर आचार्यको गोनिष्क्रयद्रव्य प्रदान करे।

स्नानार्थ-अनुमति—ब्रह्मचारी कहे—**भो गुरो! अहं स्नास्यामि।** (हे गुरो! मैं स्नान करूँगा।)

आचार्य कहे—**स्नाहि।** (स्नान करो) इस प्रकार गुरुकी आज्ञा प्राप्तकर बटुक स्नान करे।

---

१. अत्र समावर्तने मातृपूजनादिपूर्णपात्रदानान्तमाचार्यस्य कृत्यम्। अष्टकलशाभिषेकादिदण्डनिधानान्तं ब्रह्मचारिणः बटोः कृत्यम्।

२. गौर्विशिष्टतमा विप्रैर्वेदेष्वपि निगद्यते। न ततोऽन्यद्वरं यस्मात्तस्माद्गौर्वर उच्यते॥ (कात्यायनस्मृति २७। १४)

अर्थात् वेदों तथा ब्राह्मणोंद्वारा गौको दक्षिणाके लिये सर्वश्रेष्ठ कहा गया है। चूँकि उससे अन्य कोई दक्षिणा श्रेष्ठ नहीं है, इसलिये गौको वर कहा जाता है।

इसके बाद आचार्य समावर्तन-संस्कारके लिये निर्मित वेदीके समीप आकर पूर्वमुख आसनपर बैठे और सभी सामग्रियोंको यथास्थान रख ले। अपने दक्षिण भागमें स्नातकको उत्तरमुख बैठा ले। तदनन्तर आचमन-प्राणायाम आदि करके गणेशादि देवोंका स्मरणात्मक पूजन कर ले।

अग्निस्थापन—आचार्य समावर्तन-संस्कारके लिये बनायी गयी पंच-भूसंस्कारसे सम्पन्न वेदीपर सुवासिनीके द्वारा लायी गयी निर्धूम अंगारमय अग्निको स्थापित करनेके लिये हाथमें जल-अक्षत-पुष्प लेकर निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ....गोत्रः ....शर्माहमस्य माणवकस्य समावर्तन-संस्कारकर्मणि वैश्वानरनामाग्नेः स्थापनं करिष्ये— कहकर संकल्पजल छोड़ दे।

निम्न मन्त्रसे वेदीपर अग्निकी स्थापना करे—

ॐ अग्निं दूतं पुरो दधे हव्यवाहमुप ब्रुवे। देवाँ२ आ सादयादिह।

अग्निके ऊपर उसकी रक्षाके लिये कुछ काष्ठ आदि रखकर उसे प्रज्वलित करे।

ब्रह्मावरण*—इसके बाद ब्रह्माके वरणके लिये पुष्प-चन्दन-वस्त्र आदि वरण-सामग्री लेकर निम्न संकल्प करे—

---

* प्रायः परम्पराके अनुसार ब्रह्माके न होनेपर पचास कुशोंमें ग्रन्थि लगाकर कुशब्रह्मा बना लिया जाता है, इस स्थितिमें ब्रह्मावरणकी प्रक्रिया आचार्यद्वारा की जानी चाहिये।

ॐ अद्य ....बटोः समावर्तनहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्म कर्तुं ....गोत्रं ....शर्माणं ब्राह्मणमेभिः पुष्पचन्दनताम्बूलयज्ञोपवीतवासोभिः ब्रह्मत्वेन भवन्तमहं वृणे।

यह कहकर वरणसामग्री ब्रह्माको समर्पित करे।

ब्रह्मा कहे—**वृतोऽस्मि।**

आचार्य कहे—**यथाविहितं कर्म कुरु**—विधिके अनुसार कर्म करो।

ब्रह्मा कहे—**यथाज्ञानं करवाणि**—अपनी बुद्धिके अनुसार करूँगा।

इसके बाद अग्निके दक्षिणमें स्थापित शुद्ध आसनपर पूर्वको अग्रभाग करके कुश बिछाये। फिर ब्रह्मासे कहे—**अस्मिन् कर्मणि त्वं ब्रह्मा भव**—आप इस समावर्तन कर्ममें ब्रह्मा बनें।

ब्रह्मा कहें—**ॐ भवामि**—मैं बनता हूँ।

इसके बाद बटुक ब्रह्माकी प्रार्थना करे—

यथा चतुर्मुखो ब्रह्मा सर्ववेदधरः प्रभुः। तथा त्वं मम यज्ञेऽस्मिन् ब्रह्मा भव द्विजोत्तम॥

ब्रह्माको अग्निकी प्रदक्षिणा कराकर वेदीके दक्षिण भागमें आसनपर बैठा दे।

कुशकण्डिका—पृ०सं० ३९ में दी गयी विधिके अनुसार कुशकण्डिका करे।

अग्निप्रतिष्ठा—निम्न मन्त्रसे अक्षत छोड़ते हुए अग्निकी प्रतिष्ठा करे—

ॐ वैश्वानरनामाग्ने* सुप्रतिष्ठितो वरदो भव।

अग्निका ध्यान—इसके बाद निम्न मन्त्रोंसे अग्निका ध्यान करे—

अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम्। सुवर्णवर्णममलमनन्तं विश्वतोमुखम्॥
सर्वतः पाणिपादश्च सर्वतोऽक्षिशिरोमुखः। विश्वरूपो महानग्निः प्रणीतः सर्वकर्मसु॥

ॐ चत्वारि शृङ्गा त्रयो अस्य पादा द्वे शीर्षे सप्त हस्तासो अस्य।
त्रिधा बद्धो वृषभो रोरवीति महो देवो मर्त्याँ२ आ विवेश॥

ॐ भूर्भुवः स्वः वैश्वानरनाम्ने अग्नये नमः। सर्वोपचारार्थे गन्धाक्षतपुष्पाणि समर्पयामि। कहकर गन्धाक्षतपुष्पसे अग्निका पूजन करे। इसके बाद हवन करे।

दक्षिण जानु भूमिसे लगाये। ब्रह्मा कुशसे हवनकर्ताके दक्षिण बाहुका स्पर्श किये रहे (**अन्वारब्ध**)। हवनसे पूर्व हवनकर्ता आचमन कर ले। मूल और मध्यभागके मध्यसे स्रुवाको पकड़कर निम्न मन्त्रोंसे हवन करे और आहुतिसे बचा घी प्रणीतापात्रमें छोड़ता जाय।

हवन-विधि—(१) **ॐ प्रजापतये** (मनसे उच्चारण करे) **स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।**

(२) **ॐ इन्द्राय स्वाहा, इदमिन्द्राय न मम।**

* 'वैश्वानरो विसर्गे स्यात्' इस वचनके अनुसार समावर्तन-संस्कारकर्ममें सम्पन्न होनेवाले हवनकी अग्निका नाम 'वैश्वानर' है।

(३) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(४) ॐ सोमाय स्वाहा, इदं सोमाय न मम।

इसके बाद ब्रह्मा हवनकर्तासे कुशोंका स्पर्श हटा ले (अनन्वारब्ध), तत्पश्चात् हवन करे।

यजुर्वेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ अन्तरिक्षाय स्वाहा, इदमन्तरिक्षाय न मम।

(२) ॐ वायवे स्वाहा, इदं वायवे न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

ऋग्वेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ पृथिव्यै स्वाहा, इदं पृथिव्यै न मम।

(२) ॐ अग्नये स्वाहा, इदमग्नये न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

सामवेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ दिवे स्वाहा, इदं दिवे न मम।

(२) ॐ सूर्याय स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

अथर्ववेदके लिये आहुतियाँ—

(१) ॐ दिग्भ्यः स्वाहा, इदं दिग्भ्यो न मम।

(२) ॐ चन्द्रमसे स्वाहा, इदं चन्द्रमसे न मम।

(३) ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, इदं ब्रह्मणे न मम।

(४) ॐ छन्दोभ्यः स्वाहा, इदं छन्दोभ्यो न मम।

सामान्य आहुतियाँ—

(१) ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।

(२) ॐ देवेभ्यः स्वाहा, इदं देवेभ्यो न मम।

(३) ॐ ऋषिभ्यः स्वाहा, इदमृषिभ्यो न मम।

(४) ॐ श्रद्धायै स्वाहा, इदं श्रद्धायै न मम।

(५) ॐ मेधायै स्वाहा, इदं मेधायै न मम।

(६) ॐ सदसस्पतये स्वाहा, इदं सदसस्पतये न मम।

(७) ॐ अनुमतये स्वाहा, इदमनुमतये न मम।

पुनः ब्रह्मा हवनकर्ताका कुशसे स्पर्श करे (**अन्वारब्ध**) और हवनकर्ता हवन करे—

भूरादि नवाहुति—

१-ॐ भूः स्वाहा, इदमग्नये न मम।

२-ॐ भुवः स्वाहा, इदं वायवे न मम।

३-ॐ स्वः स्वाहा, इदं सूर्याय न मम।

४-ॐ त्वं नो अग्ने वरुणस्य विद्वान् देवस्य हेडो अव यासिसीष्ठाः। यजिष्ठो वह्नितमः शोशुचानो विश्वा द्वेषाꣳसि प्र मुमुग्ध्यस्मत्स्वाहा, इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

५-ॐ स त्वं नो अग्नेऽवमो भवोती नेदिष्ठो अस्या उषसो व्युष्टौ। अव यक्ष्व नो वरुणꣳरराणो वीहि मृडीकꣳ सुहवो न एधि स्वाहा। इदमग्नीवरुणाभ्यां न मम।

६-ॐ अयाश्चाग्नेऽस्यनभिशस्तिपाश्च सत्यमित्वमयाऽअसि। अया नो यज्ञं वहास्यया नो धेहि भेषजꣳ

स्वाहा। इदमग्नये ऽयसे न मम।

७-ॐ ये ते शतं वरुण ये सहस्रं यज्ञियाः पाशा वितता महान्तः। तेभिर्नो ऽअद्य सवितोत विष्णुर्विश्वे मुञ्चन्तु मरुतः स्वर्काः स्वाहा॥ इदं वरुणाय सवित्रे विष्णवे विश्वेभ्यो देवेभ्यो मरुद्भ्यः स्वर्केभ्यश्च न मम।

८-ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाधमं विमध्यमꣳश्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसोऽअदितये स्याम स्वाहा॥ इदं वरुणायादित्यायादितये न मम।

९-(मौन होकर) **ॐ प्रजापतये स्वाहा, इदं प्रजापतये न मम।**

स्विष्टकृत् आहुति—

इसके बाद ब्रह्माद्वारा कुशसे स्पर्श किये जाते हुए निम्न मन्त्रोंसे घृतद्वारा स्विष्टकृत् आहुति दे—

ॐ अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा, इदमग्नये स्विष्टकृते न मम।

संस्रवप्राशन—

हवन पूर्ण होनेपर प्रोक्षणीपात्रसे घृत दाहिने हाथमें लेकर यत्किंचित् पान करे। हाथ धो ले। फिर आचमन करे।

मार्जनविधि—

इसके बाद निम्नलिखित मन्त्रद्वारा प्रणीतापात्रके जलसे कुशोंके द्वारा अपने सिरपर मार्जन करे—

ॐ सुमित्रिया न आप ओषधयः सन्तु।

इसके बाद निम्न मन्त्रसे जल दूसरी ओर छोड़े—

ॐ दुर्मित्रियास्तस्मै सन्तु योऽस्मान् द्वेष्टि यं च वयं द्विष्मः।

पवित्रप्रतिपत्ति—पवित्रकको अग्निमें छोड़ दे।

पूर्णपात्रदान—पूर्वमें स्थापित पूर्णपात्रमें द्रव्य-दक्षिणा रखकर निम्न संकल्पकर दक्षिणासहित पूर्णपात्र ब्रह्माको प्रदान करे—

ॐ अद्य समावर्तनाङ्गहोमकर्मणि कृताकृतावेक्षणरूपब्रह्मकर्मप्रतिष्ठार्थमिदं वृषनिष्क्रयद्रव्यसहितं पूर्णपात्रं प्रजापतिदैवतं ....गोत्राय ....शर्मणे ब्रह्मणे भवते सम्प्रददे। कहकर पूर्णपात्र ब्रह्माको दे दे।

ब्रह्मा '**स्वस्ति**' कहकर उस पूर्णपात्रको ग्रहण कर ले।

प्रणीताविमोक—प्रणीतापात्रको ईशानकोणमें उलटकर रख दे।

मार्जन—उपयमन कुशोंद्वारा निम्न मन्त्रसे उलटकर रखे गये प्रणीताके जलसे मार्जन करे—

ॐ आपः शिवाः शिवतमाः शान्ताः शान्ततमास्तास्ते कृण्वन्तु भेषजम्। उन कुशोंको अग्निमें छोड़ दे तथा ब्रह्मग्रन्थिको खोल दे।

परिसमूहन—इसके बाद ब्रह्मचारी अग्निकुण्डके पश्चिमकी ओर बैठकर घीमें डूबी हुई सूखी समिधाएँ अथवा पाँच शुष्क गोमयपिण्ड लेकर निम्न मन्त्रोंका उच्चारण करता हुआ हवन करे—

१-ॐ अग्ने सुश्रवः सुश्रवसं मा कुरु।

२-ॐ यथा त्वमग्ने सुश्रवः सुश्रवा असि।

३-ॐ एवं माꣳ सुश्रवः सौश्रवसं कुरु।

४-ॐ यथा त्वमग्ने देवानां यज्ञस्य निधिपा ऽअसि।

५-ॐ एवमहं मनुष्याणां वेदस्य निधिपो भूयासम्।

अग्निपर्युक्षण तथा समिदाधान—इसके बाद प्रदक्षिणक्रमसे ईशानसे उत्तरतक जलसे अग्निका प्रोक्षणकर एक समिधाको घीमें डुबोकर खड़े होकर निम्न मन्त्रको पढ़कर अग्निमें एक आहुति प्रदान करे—

ॐ अग्नये समिधमाहार्षं बृहते जातवेदसे। यथा त्वमग्ने समिधा समिध्यस ऽएवमहमायुषा मेधया वर्चसा प्रजया पशुभिर्ब्रह्मवर्चसेन समिन्धे जीवपुत्रो ममाचार्यो मेधाव्यहमसान्यनिराकरिष्णुर्यशस्वी तेजस्वी ब्रह्मवर्चस्यान्नादो भूयासꣳस्वाहा।

इसी मन्त्रसे घृताक्त समिधाके द्वारा दो आहुतियाँ और प्रदान करे।

तदनन्तर पूर्वरीतिसे '**अग्नेः सुश्रवः**' आदि पाँच मन्त्रोंद्वारा सूखी समिधाओं अथवा शुष्क गोमयपिण्डसे पाँच आहुतियाँ दे।

पुनः पूर्ववत् जलसे अग्निका प्रोक्षण करे तथा अग्निमें हाथ सेंककर निम्नलिखित प्रत्येक मन्त्रसे मुखपर हाथ फेरे—

ॐ तनूपाऽअग्नेऽसि तन्वं मे पाहि।

ॐ आयुर्दाऽअग्नेऽस्यायुर्मे देहि।

ॐ वर्चोदाऽअग्नेऽसि वर्चो मे देहि।

ॐ अग्ने यन्मे तन्वा ऊनं तन्म ऽ आपृण।

ॐ मेधां मे देवः सविता आदधातु।

ॐ मेधां मे देवी सरस्वती आदधातु।

ॐ मेधामश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्त्रजौ।

सर्वांगस्पर्श—इसके बाद निम्न मन्त्रसे ब्रह्मचारी अपने सम्पूर्ण शरीरपर हाथ फेरे—

ॐ अङ्गानि च म ऽ आप्यायन्ताम्।

इसके बाद निम्न मन्त्रोंसे यथानिर्दिष्ट अंगोंका स्पर्श करे—

ॐ वाक् च म ऽ आप्यायताम्—मुखका स्पर्श करे।

ॐ प्राणश्च म ऽ आप्यायताम्—दोनों नासिकारन्ध्रोंका स्पर्श करे।

ॐ चक्षुश्च म ऽ आप्यायताम्—दोनों नेत्रोंका स्पर्श करे।

ॐ श्रोत्रञ्च म ऽ आप्यायताम्—क्रमसे दाहिने और बायें कानका स्पर्श करे।

ॐ यशो बलं च म ऽ आप्यायताम्—दोनों भुजाओंका दाहिनेसे बायेंका और बायेंसे दाहिनेका परस्पर एक साथ

स्पर्श करे। तदनन्तर जलका स्पर्श कर ले।

त्र्यायुष्करण—तत्पश्चात् स्रुवासे भस्म लेकर दायें हाथकी अनामिकाके अग्रभागसे निम्न मन्त्रोंसे बटुकके निर्दिष्ट अंगोंमें भस्म लगाये—

ॐ त्र्यायुषं जमदग्नेः—ललाटमें।

ॐ कश्यपस्य त्र्यायुषम्—कण्ठमें।

ॐ यद्देवेषु त्र्यायुषम्—दक्षिण बाहुमूलपर।

ॐ तन्नो अस्तु त्र्यायुषम्—हृदयमें।

अग्नि तथा आचार्यका अभिवादन—

तदनन्तर ब्रह्मचारी गोत्र-प्रवरपूर्वक अपना नामोच्चारण करता हुआ अग्नि तथा गुरु आदिको प्रणाम करे।

अग्ने त्वामभिवादये ....गोत्रः ....प्रवरान्वितः ....शर्माहं भोः३ कहकर अग्निको प्रणाम करे।

बटुक अपने दाहिने हाथसे गुरुके दाहिने चरणका और बायें हाथसे बायें चरणका स्पर्श करते हुए बोले—**भो गुरो त्वामभिवादये ....गोत्रः ....प्रवरान्वितः ....शर्माहं भोः**—आचार्यको प्रणाम करे।

आशीर्वाद—आचार्य निम्न वाक्य कहकर आशीर्वाद दे—

आयुष्मान् भव सौम्य शर्मन्/वर्मन्/गुप्त।

बटुक अन्य श्रेष्ठजनोंका भी वन्दन करे।

आठ कलशोंके जलसे अभिषेककी विधि*

पूर्व दिशामें दक्षिणोत्तर क्रमसे स्थापित जलपूर्ण, आम्र आदिके पल्लवोंसे युक्त, ताम्र आदिके पात्रवाले आठ कलशोंके चारों ओर पूर्वाग्र कुशा बिछाये, उसपर उत्तरमुख बैठकर दक्षिणसे एक-एक कलशका जल लेकर बटुक अपना अभिसिंचन करे।

प्रथम कलशसे जलका ग्रहण और अभिषेक—निम्न मन्त्रसे प्रथम कलशसे दक्षिण चुल्लूमें जल ले—

ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः प्रविष्टा गोह्य उपगोह्यो मयूखो मनोहाऽस्खलो विरुजस्तनूदूषिरिन्द्रियहा तान् विजहामि यो रोचनस्तमिह गृह्णामि।

तदनन्तर निम्न मन्त्रसे अपने सिरपर अभिषेक करे—

ॐ तेन मामभिषिञ्चामि श्रियै यशसे ब्रह्मणे ब्रह्मवर्चसाय।

द्वितीय कलशसे जलका ग्रहण और अभिषेक—'**ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः०**' इत्यादि पूर्वोक्त मन्त्रसे जल ग्रहण करे और निम्न मन्त्रसे अभिषेक करे—

ॐ येन श्रियमकृणुतां येनावमृशताꣳ सुराम्। येनाक्ष्यावभ्यषिञ्चतां यद्वां तदश्विना यशः॥

* यहाँसे आगेके कर्म बटुक स्वयं सम्पन्न करे।

तृतीय कलशसे जलका ग्रहण और अभिषेक—‘**ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः०**’ पूर्वोक्त मन्त्रसे जल ग्रहण करे और निम्न मन्त्रसे अभिषेक करे—

ॐ आपो हि ष्ठा मयो भुवस्ता न ऊर्जे दधातन। महे रणाय चक्षसे।

चतुर्थ कलशसे जलका ग्रहण और अभिषेक—‘**ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः०**’ इस पूर्वोक्त मन्त्रसे जल ग्रहण करे और निम्न मन्त्रसे अभिषेक करे—

ॐ यो वः शिवतमो रसस्तस्य भाजयतेह नः। उशतीरिव मातरः।

पंचम कलशसे जलका ग्रहण और अभिषेक—‘**ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः**’ इस पूर्वोक्त मन्त्रसे जल ग्रहण करे और निम्न मन्त्रसे सिरपर अभिषेक करे—

ॐ तस्मा अरङ्गमाम वो यस्य क्षयाय जिन्वथ। आपो जनयथा च नः।

इसी प्रकार षष्ठ, सप्तम और अष्टम कलशसे ‘**ॐ येऽप्स्वन्तरग्नयः०**’ इस मन्त्रसे क्रमशः जल लेकर मौन रहकर ही सिरपर अभिषेक करे।

मेखलानिस्सारण—इसके बाद बटुक निम्न मन्त्र पढ़ता हुआ शिरोमार्गसे मेखलाको निकाले—

ॐ उदुत्तमं वरुण पाशमस्मदवाऽधमं मध्यम ँ श्रथाय। अथा वयमादित्य व्रते तवानागसो अदितये स्याम स्वाहा।

दण्ड और मृगचर्मका परित्याग—तदनन्तर ब्रह्मचारी अपने पलाश-दण्डको उत्तराग्र भूमिपर रख दे, धारण किये मृगचर्मको मौन होकर उतारकर अन्य कोई वस्त्र उत्तरीयके रूपमें धारण करे और दो बार आचमन कर ले।

सूर्योपस्थान—इसके बाद दोनों बाहुओंको ऊपर उठाकर निम्न मन्त्रोंसे सूर्यका उपस्थान करे—

ॐ उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात्प्रातर्यावभिरस्थाद् दशसनिरसि दशसनिं मा कुर्वा विदन् मा गमय।
उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थाद् दिवा यावभिरस्थाच्छतसनिरसि शतसनिं मा कुर्वा विदन् मा गमय।
उद्यन् भ्राजभृष्णुरिन्द्रो मरुद्भिरस्थात् सायं यावभिरस्थात् सहस्रसनिरसि सहस्रसनिं मा कुर्वा विदन् मा गमय।

दन्तधावन—इसके बाद ब्रह्मचारी दधि अथवा तिलको बायें हाथके मध्यभाग (सोमतीर्थ)-में लेकर उसका सेवनकर शिखाके अतिरिक्त समस्त केश मुण्डन कराकर नखादि कटवाकर* द्वादश अंगुल परिमित औदुम्बर (गूलर)-के काष्ठसे निम्न मन्त्र पढ़कर दन्तधावन करे—

ॐ अन्नाद्याय व्यूहध्वꣳसोमो राजाऽयमागमत्। स मे मुखं प्रमार्क्ष्यते यशसा च भगेन च॥

नासिका आदिका स्पर्श—इसके बाद ब्रह्मचारी बारह बार जलसे कुल्लाकर सुगन्धित तेलसे युक्त उबटन आदिसे शरीरोद्वर्तनकर समशीतोष्ण जलसे स्नान करे तथा नूतन वस्त्र आदि धारणकर चन्दन आदिका अनुलेपनकर निम्न मन्त्रोंसे नासिका, नेत्र और श्रोत्रका स्पर्श करे—

---

* उपनयन-संस्कारमें केशादिका मुण्डन हो जानेसे केवल छुरेसे मुण्डित सिर आदिका स्पर्श करा लेना चाहिये।

ॐ प्राणापानौ मे तर्पय—एक साथ दोनों नासिकाका स्पर्श करे।

ॐ चक्षुर्मे तर्पय—एक साथ दोनों नेत्रोंका स्पर्श करे।

ॐ श्रोत्रं मे तर्पय—एक साथ दोनों कानोंका स्पर्श करे।

पितरोंके निमित्त जलांजलि—इसके बाद ब्रह्मचारी दोनों हाथोंको धोकर अपसव्य होकर प्राङ्मुख रहते हुए दक्षिण दिशामें भूमिपर निम्न श्रुतिवाक्यसे पितरोंके निमित्त पितृतीर्थसे अवनेजन (जलांजलि) प्रदान करे—

'ॐ पितरः शुन्धध्वम्।'

सविता देवताकी प्रार्थना—तदनन्तर सव्य होकर आचमन करे, चन्दनसे तिलक लगाकर निम्न मन्त्रसे सविता देवताकी प्रार्थना करे—

ॐ सुचक्षा अहमक्षीभ्यां भूयासꣳ सुवर्चा मुखेन।

सुश्रुत्कर्णाभ्यां भूयासम्।

नूतनवस्त्र-धारण—इसके बाद स्नातक निम्न मन्त्रसे नया वस्त्र धारण करे—

ॐ परिधास्यै यशोधास्यै दीर्घायुत्वाय जरदष्टिरस्मि। शतं च जीवामि शरदः पुरूची रायस्पोषमभि संव्यविष्ये।

इसके बाद दो बार आचमन करे।

यज्ञोपवीत-धारण—धारणसे पूर्व हाथमें जल लेकर निम्न विनियोगमन्त्र बोले—

ॐ यज्ञोपवीतमित्यस्य परमेष्ठी ऋषिः त्रिष्टुप्छन्दो लिङ्गोक्ता देवता यज्ञोपवीतधारणे विनियोगः—यह कहकर जल छोड़े।

इसके बाद स्नातक निम्न मन्त्रका उच्चारण करता हुआ द्वितीय यज्ञोपवीत धारण करे—

ॐ यज्ञोपवीतं परमं पवित्रं प्रजापतेर्यत्सहजं पुरस्तात्। आयुष्यमग्र्यं प्रतिमुञ्च शुभ्रं यज्ञोपवीतं बलमस्तु तेजः॥

पुनः दो बार आचमन करे।

उत्तरीय वस्त्र-धारण—इसके बाद ब्रह्मचारी निम्न मन्त्र बोलता हुआ उत्तरीय वस्त्र धारण करे—

ॐ यशसा मा द्यावापृथिवी यशसेन्द्राबृहस्पती। यशो भगश्च माऽविन्दद् यशो मा प्रतिपद्यताम्॥

पुनः दो बार आचमन करे।

अलंकरणादि-धारण—ब्रह्मचारी विद्याव्रतस्नातकके रूपमें गृहस्थधर्मानुकूल विभिन्न अलंकार धारणकर निम्न मन्त्रसे पुष्पमाला ग्रहण करे—

ॐ या आहरज्जमदग्निः श्रद्धायै मेधायै कामायेन्द्रियाय।
ता अहं प्रतिगृह्णामि यशसा च भगेन च॥

निम्न मन्त्रसे पुष्पमाला धारण करे—

ॐ यद्यशोऽप्सरसामिन्द्रश्चकार विपुलं पृथु। तेन सङ्ग्रथिताः सुमनस आबध्नामि यशो मयि॥

पगड़ी-धारण—इसके बाद स्नातक निम्न मन्त्रसे सिरपर पगड़ी धारण करे—

ॐ युवा सुवासाः परिवीत आगात्स उ श्रेयान् भवति जायमानः। तं धीरासः कवय उन्नयन्ति स्वाध्यो मनसा देवयन्तः॥

कर्णालंकरणधारण—निम्न मन्त्रसे पहले दक्षिण कर्णमें पुनः वाम कर्णमें कर्णालंकरण (कुण्डल आदि) धारण करे—

ॐ अलङ्करणमसि भूयोऽलङ्करणं भूयात्।

अंजनधारण *—निम्न मन्त्रसे क्रमसे दक्षिण और वाम नेत्रमें अंजन (काजल) लगाये—

ॐ वृत्रस्यासि कनीनकश्चक्षुर्दा असि चक्षुर्मे देहि।

दर्पणमें मुखावलोकन—निम्न मन्त्रसे दर्पणमें मुखको देखे—

'ॐ रोचिष्णुरसि।'

छत्र-धारण—निम्न मन्त्रसे छत्र (छाता) ग्रहण करे—

ॐ बृहस्पतेश्छदिरसि पाप्मनो मामन्तर्धेहि तेजसो यशसो माऽन्तर्धेहि॥

उपानह (जूता)-धारण—निम्न मन्त्रसे स्नातक नवीन जूता पहने—

ॐ प्रतिष्ठे स्थो विश्वतो मा पातम्।

---

* लोकाचारके अनुसार सुवासिनी आदिके द्वारा भी काजल धारण कराया जाता है।

दण्डधारण—निम्न मन्त्रसे नवीन बाँसका दण्ड (छड़ी) धारण करे—

ॐ विश्वाभ्यो मा नाष्ट्राभ्यस्परि पाहि सर्वतः।

आचार्यके लिये गोदान—इसके बाद स्नातक अपने आचार्यकी विधिवत् पूजाकर उन्हें दक्षिणाके रूपमें द्रव्यादिके अतिरिक्त गौ अथवा तन्निष्क्रयभूत द्रव्य प्रदान करनेके लिये निम्न संकल्प करे—

ॐ अद्य ''''गोत्रः ''''शर्मा मम स्नातकत्वसिद्धये इदं वररूपेण गोनिष्क्रयद्रव्यमाचार्याय दातुमहमुत्सृज्ये। दक्षिणा दे।

स्नातकके सामान्य नियम—तदुपरान्त स्नातक आचार्यके मुखसे गृहस्थ जीवनके लिये पालनीय नियमोंको श्रद्धापूर्वक सुने।* पारस्करगृह्यसूत्रके **'स्नातकस्य यमान् वक्ष्यामः'** इस प्रमाणके अनुसार स्नातकके नियमोंका संक्षेपमें कथन किया जा रहा है—

* नृत्यगीतवादित्राणि न कुर्यात् न च गच्छेत्। क्षेमे नक्तं ग्रामान्तरं न गच्छेत्, न च धावेत्। उदपानाऽवेक्षण-वृक्षारोहण-फलप्रपतन-सन्धिसर्पण-विवृतस्नान-विषमलङ्घन-शुक्तवदन-सन्ध्यादित्यप्रेक्षणभैक्षणानि न कुर्यात्। वर्षत्यप्रावृतो व्रजेत् 'ॐअयं मे वज्रः पाप्मानमपहनत्' इति मन्त्रं पठन् गच्छेत्। अप्स्वात्मानं नावेक्षेत। अजातलोम्नीं विपुंसीं षण्ढं च नोपहसेत्। गर्भिणीं विजन्येति ब्रूयात्। सकुलमिति नकुलम्। भगालमिति कपालम्। मणिधनुरितीन्द्रधनुः। गां धयन्तीं परस्मै नाचक्षीत। उर्वरायामनन्तर्हितायां भूमावुत्सर्पिस्तिष्ठन्न मूत्रपूरीषे कुर्यात्। स्वयं प्रशीर्णेन काष्ठेन गुदं प्रमृजीत। विकृतं वासो नाच्छादयीत। दृढव्रतो वधत्रः स्यात्। सर्वतः आत्मानं गोपायेत्। सर्वेषां मित्रमिव स्यात्। तिस्रो रात्रीर्व्रतं चरेत्। अमांसाशी अमृण्मयपायी स्यात्। स्त्रीशूद्रशवकृष्णशकुनिशुनां चादर्शनमसम्भाषा च तैः। शवशूद्रसूतकान्नानि च नाद्यात्। मूत्रपुरीषे ष्ठीवनं चातपे न कुर्यात्। सूर्याच्चात्मानं नान्तर्दधीत। तप्नेनोदकार्थान् कुर्वीत। अवज्योत्य रात्रौ भोजनम्। सत्यवदनमेव वा। (पा०गृ०सू० काण्ड २, कण्डिका ७-८)

१-नाचने, गाने तथा बजानेका काम न स्वयं करे और न ही दूसरोंद्वारा अनुष्ठित ऐसे कार्योंमें भाग ले।

२-यदि सब कुछ ठीक हो तो रात्रिमें दूसरे गाँवमें न जाय और न अनावश्यक दौड़े।

३-कुएँमें न झाँके, पेड़पर न चढ़े, कच्चे फल तोड़कर न गिराये, सन्धि-वेलामें यात्रा न करे और जीर्णद्वारसे गमन न करे तथा परस्पर मैत्रीमें भेद उपस्थित न करे, नग्न होकर स्नान न करे, ऊबड़-खाबड़ भूमिको न लाँघे, लज्जाजनक, अमंगलकर तथा निष्ठुर वाक्योंको न बोले, सन्धिवेलामें सूर्यदर्शन न करे, समावर्तनके बाद भिक्षाटन न करे।

४-जलमें अपनी परछाईं न देखे।

५-अपने बछड़ेको दूध पिलाती हुई गायके बारेमें दूसरेसे न कहे।

६-उर्वर भूमि या बंजर भूमिपर खड़े होकर या कूद-कूदकर मल-मूत्रका त्याग न करे।

७-अपवित्र एवं निषिद्ध वस्त्र न पहने।

८-निष्ठापूर्वक अपने व्रतनियमका पालन करे तथा हिंसासे अपनी तथा दूसरोंकी भी रक्षा करे।

९-सर्वतोभावेन अपनी रक्षा करे।

१०-सभीके साथ मित्रवत् व्यवहार करे।

११-स्नातकको समावर्तनसंस्कारसे तीन दिनतक व्रत रखना चाहिये।

१२-मांस न खाये तथा मिट्टीके बर्तनमें जल न पीये।

१३-मरणाशौचसे युक्त व्यक्तियोंका, शूद्रका तथा जननाशौचवाले लोगोंका अन्न नहीं खाना चाहिये।

१४-धूपमें मल-मूत्रका त्याग न करे और न थूके।

१५-रात्रिमें दीपक जलाकर ही भोजन करे, अन्धकारमें भोजन न करे।

१६-सदा सत्य बोले, मिथ्याभाषण न करे।

तदनन्तर स्नातक गुरुके चरणोंमें प्रणामकर '**एतान्नियमान् करिष्यामि**'—इन नियमोंका पालन करूँगा—ऐसा कहे।

पूर्णाहुति

यज्ञोपवीत, विवाह आदिमें पूर्णाहुतिका निषेध किया गया है—

'विवाहे व्रतबन्धे च शालायां वास्तुकर्मणि। गर्भाधानादिसंस्कारे पूर्णाहुतिं न कारयेत्॥'

दक्षिणादान—इसके बाद स्नातक हाथमें गन्ध-पुष्प-अक्षत-ताम्बूल तथा दक्षिणा लेकर निम्न संकल्पवाक्य बोलकर आचार्यको दक्षिणा दे—

ॐ अद्य कृतानां उपनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्मणां* साङ्गतासिद्ध्यर्थं हिरण्यनिष्क्रयभूतं द्रव्यं आचार्याय भवते सम्प्रददे।

* यदि समावर्तन उसी समय न किया जाय तो आचार्यदक्षिणा, ब्राह्मणभोजन तथा भूयसी दक्षिणाके संकल्पमेंसे 'समावर्तन' शब्द हटाकर 'कर्मणाम्' की जगह 'कर्मणोः' (उपनयनवेदारम्भकर्मणोः) द्विवचनका प्रयोग करना चाहिये।

इसी प्रकार होता, गायत्री तथा गणेशमन्त्रजापकको भी दक्षिणा प्रदान करे।

ब्राह्मणभोजनका संकल्प—निम्न संकल्पवाक्य बोलकर ब्राह्मणभोजनका संकल्प करे—

ॐ अद्य कृतानां उपनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्मणां साङ्गतासिद्ध्यर्थं यथासंख्याकान् ब्राह्मणान् भोजयिष्ये। तेभ्यः ताम्बूलदक्षिणां च दास्ये।

भूयसीदक्षिणाका संकल्प—इसके बाद भूयसी दक्षिणाका संकल्प करे—

ॐ अद्य कृतानां उपनयनवेदारम्भसमावर्तनकर्मणां साङ्गतासिद्ध्यर्थं तन्मध्ये न्यूनातिरिक्तदोषपरिहारार्थं इमां भूयसीदक्षिणां विभज्य दातुमहमुत्सृज्ये।

तदनन्तर ब्राह्मणोंके माथेमें रोली-अक्षत लगाये।

विसर्जन—इसके बाद अग्नि तथा आवाहित देवताओंका अक्षत छोड़ते हुए निम्न मन्त्र पढ़कर विसर्जन करे—

यान्तु देवगणाः सर्वे पूजामादाय मामकीम्। इष्टकार्यसमृद्ध्यर्थं पुनरागमनाय च॥
गच्छ गच्छ सुरश्रेष्ठ स्वस्थाने परमेश्वर। यत्र ब्रह्मादयो देवास्तत्र गच्छ हुताशन॥

विष्णुस्मरण—इसके बाद हाथमें पुष्प-अक्षत लेकर भगवान्‌का स्मरण करते हुए समस्त कर्म उन्हें अर्पित करे—

प्रमादात् कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु यत्। स्मरणादेव तद् विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः॥
यस्य स्मृत्या च नामोक्त्या तपोयज्ञक्रियादिषु। न्यूनं सम्पूर्णतां याति सद्यो वन्दे तमच्युतम्॥

यत्पादपङ्कजस्मरणाद् यस्य नामजपादपि। न्यूनं कर्म भवेत् पूर्णं तं वन्दे साम्बमीश्वरम्॥

कायेन वाचा मनसेन्द्रियैर्वा बुध्यात्मना वा प्रकृतिस्वभावात्। करोमि यद्यत् सकलं परस्मै नारायणायेति समर्पयामि॥

ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः। ॐ विष्णवे नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः। ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।
ॐ साम्बसदाशिवाय नमः।

महानीराजन और तिलककरण—आचारानुसार भगिनी आदि स्नातकका महानीराजनकर तिलक करें।

॥ समावर्तनसंस्कार-प्रयोग पूर्ण॥

॥ उपनयन, वेदारम्भ तथा समावर्तन-संस्कारविधि पूर्ण हुई॥

उपनयन, वेदारम्भ एवं समावर्तन-संस्कारकी सामग्री-सूची

१. रोली २५ ग्रा०
२. अबीर बुक्का २५ ग्रा०
३. सिन्दूर १० ग्रा०
४. कपूर १०० ग्रा०
५. धूप, अगरबत्ती १ पैकेट
६. गोपीचन्दन (पीला) २५ ग्रा०
७. भस्म १ पैकेट
८. जनेऊ १५ जोड़ी
९. नारा (मौली/कलावा) १ रील
१०. पानके पत्ते १५ नग
११. सुपारी २५ नग
१२. लौंग १० ग्रा०
१३. इलायची १० ग्रा०
१४. पेड़ा (मिठाई) ५०० ग्रा०
१५. ऋतुफल १५ नग
१६. चावल ३ कि० ग्रा०
१७. आमके पत्ते ३ नग
१८. शतावर २५ ग्रा०
१९. सर्वोषधी २ पैकेट
२०. कलश
(धातु या मिट्टीका) ३ नग
२१. दीपक (मिट्टीके) २५ नग
२२. दही जमानेका पात्र
(मिट्टीका) १ नग
२३. कसोरा [सकोरा]
(मिट्टीका) १५ नग
२४. कुशा १०० नग
२५. सप्तधान्य
(सात अनाज) ५० ग्रा०
२६. काले तिल २५० ग्रा०
२७. मसूरकी दाल २५० ग्रा०
२८. मूँगकी दाल २५० ग्रा०
(हरी छिलके वाली)
२९. चनेकी दाल ५०० ग्रा०
३०. गोघृत २५० ग्रा०
३१-३५. पंचामृतकी सामग्री
दूध, दही, घी शहद, चीनी
(आवश्यकतानुसार)
३६. नारियल पानीवाला २ नग
३७. गरीका गोला १ नग
३८. लाल कपड़ा १ मी०
३९. सफेद कपड़ा २ मी०
४०. आमकी लकड़ी
(छोटी) २ कि०ग्रा०
४१. गोहरी (उपला/कण्डा) ५ नग
४२. हवन सामग्री
४३. आज्यस्थाली (घृतपात्र) ३ नग
४४. पूर्णपात्र (टोपिया) ३ नग
४५. समिधा
(पलाशकी लकड़ी) ११ नग
४६. दातुन (गूलरकी) १ नग
४७. खड़ाऊँ १ जोड़ी

४८. छड़ी (बाँसकी)/दड़ा १ नग
४९. पलाशदण्ड १ नग
५०. मृगचर्म १ नग
५१. मुंजमेखला (मूँजकी रस्सी) १० हाथ
५२-५३. बटुकके लिये लँगोटी, दो बड़े गमछे (बाँधनेके लिये)।
५४. पीला कपड़ा ५ मी०
५५. पीढा १ नग
५६. स्लेट/पाटी/पटरी १ नग
५७. काँसेकी थाली १ नग
५८. खड्डी (खड़िया) २ रुपया
५९. गंगाजल ५ लीटर
६०. फूलकी मालाएँ ८ नग
६१. फूल ५०० ग्राम
६२. तुलसी आवश्यकतानुसार
६३. दूर्वा ,,
६४. बिल्वपत्र ,,
६५. छाता १ नग
६६. दर्पण १ नग
६७. कंघी १ नग
६८. काजल १ डिब्बी
६९. सुगन्धित तेल १ शीशी
७०. धोती (सामर्थ्यानुसार) ८ नग
७१. गमछा (,,) ८ नग
७२. साड़ी २ नग
७३. ब्लाउजका कपड़ा २ नग
७४. सुहाग पिटारी यथासम्भव
७५. फुटकर सिक्के चढ़ानेहेतु
७६. अष्टभाण्ड (गिलास) ८ नग
७७. मार्जनपात्र (गिलास) ८ नग
७८. ईंट १५ नग
७९. बालू १ बोरी
८०. पलाशके पत्तल ५ नग
८१. पलाशके दोने १ बण्डल
८२. गुड़ २ टुकड़े
८३. मिश्री या बताशे १०० ग्रा०
८४. पिसी हल्दी १०० ग्रा०
८५. पंचमेवा २५० ग्रा०
८६. पंचपात्र, तामड़ी, आचमनी आदि
८७. चादर (उपदेशार्थ) १ नग

वरण-सामग्री—
८८. धोती ब्राह्मण-संख्यानुसार
८९. गमछा ,,
९०. आसन ,,
९१. मुण्डनहेतु नाऊकी व्यवस्था
९२. फलाहारकी व्यवस्था
९३. बटुकके लिये धोती आदि नवीन वस्त्र
९४. आचार्य एवं ब्राह्मणोंकी व्यवस्था

नोट—आवश्यकतानुसार सामग्रीमें न्यूनाधिक किया जा सकता है।

कर्मकाण्डकी प्रमुख पुस्तकें

नित्यकर्म-पूजाप्रकाश [सजिल्द] (कोड 592)—इस पुस्तकमें प्रात:कालीन भगवत्स्मरणसे लेकर स्नान, ध्यान, संध्या, जप, तर्पण, बलिवैश्वदेव, देव-पूजन, देव-स्तुति, विशिष्ट पूजन-पद्धति, पञ्चदेव-पूजन, पार्थिव-पूजन, शालग्राम-महालक्ष्मी-पूजनकी विधि है। गुजराती, तेलुगु, नेपाली भी।

जीवच्छ्राद्धपद्धति (कोड 1895)—प्रस्तुत पुस्तकमें जीवित श्राद्धकी शास्त्रीय व्यवस्था दी गयी है, जिसके माध्यमसे व्यक्ति अपने जीवित रहते ही मरणोत्तर क्रियाका सही सम्पादन करके कर्म-बन्धनसे मुक्त हो सके।

अन्त्यकर्म-श्राद्धप्रकाश [ग्रन्थाकार] (कोड 1593)—इस ग्रन्थमें मूल ग्रन्थों तथा निबन्ध-ग्रन्थोंको आधार बनाकर श्राद्ध-सम्बन्धी सभी कृत्योंका साङ्गोपाङ्ग निरूपण किया गया है।

गरुडपुराण-सारोद्धार (कोड 1416)—श्राद्ध और प्रेतकार्यके अवसरोंपर विशेषरूपसे इसके श्रवणका विधान है। यह कर्मकाण्डी ब्राह्मणों एवं सर्व सामान्यके लिये भी अत्यन्त उपयोगी है।

गया-श्राद्ध-पद्धति (कोड 1809)—शास्त्रोंमें पितरोंके निमित्त गया-यात्रा और गया-श्राद्धकी विशेष महिमा बतायी गयी है। आश्विन मासमें गया-यात्राकी परम्परा है। प्रस्तुत पुस्तकमें गया-माहात्म्य, यात्राकी प्रक्रिया, श्राद्धका महत्त्व तथा श्राद्धकी प्रक्रियाको सांगोपांग ढंगसे प्रस्तुत किया गया है।

त्रिपिण्डी श्राद्ध (कोड 1928)—अपने कुल या अपनेसे सम्बद्ध अन्य कुलमें उत्पन्न किसी जीवके प्रेतयोनि प्राप्त होनेपर उसके द्वारा संतानप्राप्तिमें बाधा या अन्यान्य अनिष्टोंकी निवृत्तिके लिये किया जानेवाला श्राद्ध त्रिपिण्डी श्राद्ध है। इस पुस्तकमें त्रिपिण्डी श्राद्धका सविधि वर्णन किया गया है।